INDEX

Teaching Subject

S.No.	Topic	Date	Page	Remaks
A.	निरन्तर एवं व्यापक मूल्यांकन का विकास			
i	C.C.E. का अर्थ		1-15	
ii	CCE के प्रकार			
iii	CCE के सोपान			
iv	CCE के गुण			
v	C.C.E की विधियां			
vi	CCE के आधार पर प्रश्न पत्र			
B.	Development of learning materials.			
1	अधिगम सामग्री का अर्थ	~~16-32~~		
2	आवश्यकता एवं वर्गीकरण		16-32	
3	आवश्यक वस्तुएं			
4	प्रभावशाली प्रयोग			
5	अधिगम सामग्री के प्रकार और प्रयोग करते समय रखने वाली सावधानियां			

INDEX

Teaching Subject ______

S.No.	Topic	Date	Page	Remak
C	School Record During Internship			
1	उपलब्धि परीक्षा		35–64	
2	पाठ्य क्रम सहगामी क्रियाएँ			
3	स्कूल रिकार्ड			
4	स्कूल समय सारणी			
5	संचित अभिलेख प्रपत्र			
6	उपस्थित 4 महिने की			
7	स्थानान्तरण सार्टिफिकेट			

Course VIII
School Based Activities

		M.M.
(1)	Development of CCE in any Pedagogic Subject.	50
2.	Development of Learning materials of one Topic of any Pedagogic Subject.	

After the School internship, the Student teachers are required to prepare a report in which all the activities performed by them in the School during their stay of Sixteen weeks in the School.

निरंतर तथा व्यापक मूल्यांकन
(Continuous and Comprehensive Evaluation)

का अर्थ

निरन्तर तथा व्यापक मूल्यांकन का अर्थ (Meaning of Continuous & Comprehensive Evaluation)–निरन्तर व्यापक मूल्यांकन एक आधुनिकतम मूल्यांकन पद्धति है। यह मूल्यांकन करने की एक ऐसी पद्धति है, जिसके द्वारा परम्परागत मूल्यांकन पद्धतियों की कमियों को दूर किया जा सकता है। इस प्रकार का मूल्यांकन परम्परागत मूल्यांकन पद्धतियों को [illegible] नहीं करता। शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर निरन्तर व्यापक मूल्यांकन का प्रयोग किया जा सकता है। मूल्यांकन एक निरन्तर व्यापक क्रिया है और सम्पूर्ण शिक्षा [illegible] प्रयोग किया जा सकता है।

विद्यार्थियों के विभिन्न प्रकार से किये जाने वाले मूल्यांकन का लक्ष्य निर्धारित होना आवश्यक है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक [illegible], मनोवैज्ञानिक विकास, पारम्परिक ज्ञान एवं सांस्कृतिक धरोहर जैसे अनेक स्रोतों से प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार के लक्ष्यों को केवल शैक्षिक क्रियाओं तक सीमित नहीं कर सकते, बल्कि इसमें विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को भी शामिल करना आवश्यक है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास का स्तर तथा वांछित व्यक्तिगत एवं [illegible] गुणों आदि के [illegible] का भी ध्यान रखना होगा।

उपरोक्त लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्य-सामग्री एवं उसे प्राप्त करने की विभिन्न पद्धतियों में [illegible] परिस्थितियों के माध्यम से व्यापक ढंग से विकसित करने की आवश्यकता है। छात्रों को उनकी परिस्थितियों से परिचित करवाने के बाद इसका मूल्यांकन करना होगा कि उन परिस्थितियों ने छात्रों को लक्ष्य प्राप्त करने में किस सीमा तक सहायता की। यदि वांछित ज्ञान के स्तर का विकास उचित ढंग से नहीं हुआ तो उसका तात्पर्य यह होगा कि इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जिन पाठ्य-सामग्री एवं पद्धतियों का अनुसरण किया गया वे प्रभावशाली नहीं थीं। इस मूल्यांकन के द्वारा शैक्षिक सामग्री तथा पठन-पाठन की पद्धतियों की समीक्षा करनी होगी तथा उन्हें अपेक्षित ज्ञान के स्तर तक लाने के लिए उनमें यथावश्यक परिवर्तन करना होगा। इस प्रकार से मूल्यांकन को लक्ष्य आधारित बनाया जा सकता है।

निरन्तरता (Continuity)–वार्षिक परीक्षा के परिणामों के आधार पर छात्रों के विकास एवं उनके ज्ञान स्तर की जानकारी मिल जाती है, परन्तु इस प्रथा के [illegible] परिणामों से हम भली-भाँति परिचित हैं। यह प्रथा शैक्षिक लक्ष्यों के बिल्कुल विपरीत है। विद्यालय के सभी कार्यक्रमों में [illegible] निरन्तर मूल्यांकन इस समस्या के माध्यम से छात्रों की योग्यता एवं अयोग्यता के सम्बन्ध में [illegible] सकेगा। इस प्रकार के [illegible] का प्रयोग [illegible] विकसित [illegible] के रूप में किया जा सकता है। [illegible] छात्रों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केन्द्रित रहे और शिक्षा के पूर्व [illegible] इस प्रकार के रचनात्मक मूल्यांकन छात्रों की [illegible] के स्तर को सुधारने [illegible] की व्यवस्था को सशक्त बनाने में सहायता करते हैं। [illegible] इस प्रकार के मूल्यांकन के परिणाम [illegible] है। इसलिए निरन्तर व्यापक मूल्यांकन स्वयं लक्ष्य न होकर एक लक्ष्य को पाने का साधन मात्र है।

व्यापकता (Comprehensiveness)–परम्परागत मूल्यांकन पद्धति [illegible]

के अतिरिक्त अन्य पक्षों के मूल्यांकन की कोशिश [illegible] की जाती थी, [illegible] भी नहीं था। इस प्रकार से विद्यालय के अध्यापकों एवं विद्यार्थियों की सारी [illegible] तक ही केन्द्रित रहती थी। परिणामस्वरूप मूल्यांकन की योजना में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की [illegible] दिया गया तथा बच्चों के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य [illegible] शिक्षा पद्धति [illegible] गए। इस प्रकार से परिस्थिति [illegible] चिन्ताजनक हो गई। परिणामस्वरूप छात्रों में [illegible] लगे। इस सम्बन्ध में छात्रों के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों से जुड़े हुए व्यापक मूल्यांकन [illegible] गई है। मूल्यांकन की इस आधुनिकतम पद्धति के द्वारा सिद्धान्त और व्यवहार के बीच [illegible] महत्वपूर्ण सहायता मिल सकेगी। [illegible] व्यापक मूल्यांकन एक ऐसी पद्धति है, जिसके [illegible] से सम्बन्धित निम्न विविध क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित किया जा सकेगा–

1. छात्रों के स्वास्थ्य [illegible] से सम्बन्धित कद, वजन, विभिन्न बीमारियों से बचाव [illegible]
2. छात्रों की विभिन्न अभिरुचियों जैसे साहित्य, खेलकूद, संगीत एवं कला आदि।
3. छात्रों में समय, [illegible], सफाई की आदत, नियमितता, [illegible] एवं [illegible] की स्थापना आदि [illegible] एवं सामाजिक गुणों का विकास करना।
4. उन्हें नाटक, वाद-विवाद, भाषण, [illegible], [illegible], खेलकूद, जूनियर [illegible] बाह्य पाठ्य-सहगामी कार्यक्रमों में निपुण करना।
5. [illegible], [illegible], [illegible], धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीय एकीकरण, स्कूल की [illegible] कार्यक्रमों, स्कूलों की सम्पत्ति आदि [illegible] प्रवृत्तियों के प्रति छात्रों का [illegible]

शिक्षण संस्थाओं में व्यापक मूल्यांकन की योजना के [illegible] के लिए उसमें [illegible] है, जिससे इसे अपनाने में विभिन्न परिस्थितियों वाली संस्थाएं विभिन्न प्रकार की भौतिक [illegible] आवश्यकतानुसार कर सकें। उपरोक्त वर्णित क्षेत्रों में से किसी का भी मूल्यांकन तब [illegible] तक कि उसके परिणाम [illegible] न हों। इस सम्बन्ध में एक उपयोगी सुझाव यह भी [illegible] एवं सामाजिक गुणों में [illegible], नियमितता, सफाई रखने की आदत एवं पाठ्य–[illegible] को आवश्यक मूल्यांकन के विषय बनाए जाएं। विद्यालय में विद्यार्थियों को मूल्यांकन के लिए [illegible] में से किसी भी विषय को इच्छानुसार चुनने का अवसर प्रदान किया जाए। इस प्रकार से मूल्यां[illegible] विस्तार उसे व्यापक बना देगा। [illegible] तथा नए उपकरण ([illegible] एवं नियन्त्रण सूची आदि [illegible] का प्रयोग भी व्यापक मूल्यांकन के लिए आवश्यक है।

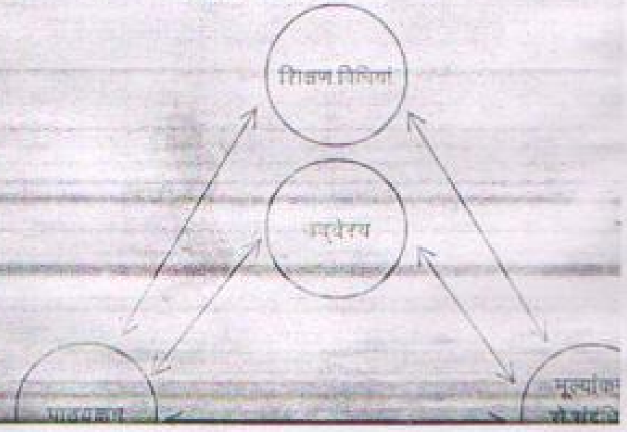

मूल्यां[illegible] (Types of Evaluation)—मूल्यांकन मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं—

(क) निर्माणात्मक मूल्यांकन तथा

(ख) संकलनात्मक मूल्यांकन।

(क) निर्माणात्मक मूल्यांकन (Formative Evaluation): निर्माणात्मक मूल्यांकन बच्चों के अधिगम को मापता है और ठीक समय पर आवश्यक प्रयास एवं शक्ति के लिए प्रेरित करता है। प्रत्येक इकाई के शिक्षण उपरान्त निर्माणात्मक परीक्षण किया जाता है। इसके द्वारा इकाई के पूरा होने से पहले आने वाली कठिनाइयों को पहचानने में मदद मिलती है। छात्र को जब किसी इकाई में निपुणता नहीं प्राप्त होती है तो निर्माणात्मक मूल्यांकन उनकी कठिनाइयों को दूर करने में मदद करते हैं। परिणामस्वरूप उन्हें इकाई में निपुणता प्राप्त करने में सुविधा रहती है। यह मूल्यांकन की एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा समय तथा स्थिति के अनुसार पाठ्यक्रम में परिवर्तन लाया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, निर्माणात्मक मूल्यांकन का मुख्य लक्ष्य पाठ्यक्रम में सुधार लाकर उसका विकास करना है।

निर्माणात्मक परीक्षण बनाने के लिए प्रयोग में आने वाले सोपान या पद (Steps Involved in Formative Test Construction)

निपुणता अधिगम युक्ति में सभी इकाइयों पर निर्माणात्मक परीक्षण विकसित किया जाता है। जिसके लिए शिक्षक द्वारा एक या दो सप्ताह में पढ़ाई जाने वाली इकाइयों की विषय-वस्तु का चयन कर लिया जाता है। निर्माणात्मक परीक्षण के निम्न मुख्य सोपान हैं—

(1) **विषय-वस्तु का विश्लेषण** : इस मूल्यांकन विधि के इस सोपान के अन्तर्गत अधिगम इकाई के अवयवों को विषय-वस्तु में जोड़ा जाता है। नई विषय-वस्तु के नियमों, सिद्धान्तों, तथ्यों और विधियों को परिभाषित कर उनका उल्लेख करते हैं। शिक्षक नई विषय-वस्तु के तत्वों को पहचानकर एक सूची तैयार कर लेता है। एक अनुभवी शिक्षक नयी विषय-वस्तु का विश्लेषण करने के पश्चात् उसे अच्छी प्रकार से पहचानता हुआ परिभाषित करता है।

(2) **छात्रों के व्यवहारों की विशिष्टता** : शिक्षक द्वारा नयी विषय-वस्तु का विश्लेषण करने के पश्चात् निर्माणात्मक मूल्यांकन के दूसरे सोपान में नई विषय-वस्तु से सम्बन्धित छात्रों के व्यवहारों को समझा जाता है। शिक्षा को विषय-वस्तु के नये तत्वों के प्रकाश में छात्रों को क्या सिखाना है? उसे क्या और कितना याद करना है? उसे कौन-कौन सी विधियाँ अपनानी चाहिए? उसे क्या-क्या व्याख्या करना है? विषय-वस्तु के सभी तत्वों को ज्ञानात्मक व्यवहारों के रूप में विश्लेषण करना होता है। ज्ञानात्मक व्यवहारों को ब्लूम के शिक्षण उद्देश्य के वर्गीकरण (ज्ञान, अवबोध, अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण एवं मूल्यांकन) के द्वारा समझा एवं पहचाना जा सकता है।

(3) **विशिष्टताओं की सारिणी बनाना** : छात्रों के व्यवहारों की विशिष्टताओं की सारिणी तैयार करते समय उनके मुख्य व्यावसायिक स्तरों को प्रत्येक कालम के ऊपर रख देते हैं और इनके नीचे उचित विषय तत्वों की सूची रख दी जाती है। इन तत्वों के मध्य सम्बन्ध [illegible] के लिए इनमें रेखाएं अंकित कर दी जाती हैं। एक तत्व एक स्तर से अधिक महत्वपूर्ण है, तो उसे दो दूसरे तत्वों के द्वारा अंकित कर दिखाया जाता है। इस प्रकार शिक्षक विशिष्टताओं की सारिणी द्वारा विभिन्न तत्वों के परस्पर सम्बन्ध और उनके विकास एवं सुधार के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार की सारिणी शिक्षकों के निर्माणात्मक परीक्षण में काफी सहायक सिद्ध होती है। इससे शिक्षक को यह पता चलता है कि परीक्षण में किन-किन चीजों को लेना है और उनका परीक्षण पद में [illegible]?

(4) महत्वपूर्ण तत्वों के [illegible] : निर्माणात्मक परीक्षण के [illegible] में वर्णित सभी इकाइयों के विभिन्न महत्वपूर्ण तत्वों के पदों का [illegible] होना चाहिए। सारिणी में यदि [illegible] है, तो उन सभी को एक या इससे अधिक पदों में [illegible] चाहिए। इसमें विभिन्न [illegible] के पदों को

को दर्शाता है। शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति की ओर इंगित करता है, आदि ये सब परीक्षण एवं मूल्यांकन के सामान्य लक्ष्य हैं। इन उद्देश्यों की पूर्ति में विभिन्न विषयों के मूल्यांकन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। प्रत्येक विषय-अध्यापक को अपने विषय में विद्यार्थियों की उपलब्धियों का मूल्यांकन करके जानना होता है कि उसके विषय में विद्यार्थियों ने कहाँ तक उन्नति की, उसका विषय शिक्षा-उद्देश्यों की पूर्ति में कहाँ तक सहायक है, उसकी शिक्षण विधियाँ कहाँ तक उपयोगी एवं प्रभावशाली रही हैं आदि। इससे सिद्ध होता है कि मूल्यांकन के सामान्य लक्ष्यों के अतिरिक्त प्रत्येक विषय के दृष्टिकोण से कुछ विशिष्ट लक्ष्य भी होते हैं। 'सामाजिक अध्ययन-शिक्षण' के मूल्यांकन के निम्नलिखित विशिष्ट लक्ष्य हैं–

1. विद्यार्थियों के ज्ञान की जांच करना (To measure the knowledge of the Students) : सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में विद्यार्थियों को मानव-जीवन को प्रभावित करने वाले विभिन्न प्रकार के वातावरणों का ज्ञान प्रदान किया जाता है, मूल्यांकन द्वारा विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त ज्ञान की जांच की जाती है और उसी जांच के आधार पर उसका योग्यता-स्तर निर्धारित किया जाता है।

2. विद्यार्थियों के कौशलों तथा अभिवृत्तियों का मूल्यांकन (To evaluate the skills and attitudes attained by the Students)–सामाजिक अध्ययन का शिक्षण विद्यार्थियों को केवल ज्ञान ही प्रदान नहीं करता, बल्कि उसमें विभिन्न सामाजिक कौशलों तथा अभिवृत्तियों को विकसित करता है, जैसे समूह में काम करने की प्रवृत्ति, तर्कसंगत चिंतन की प्रवृत्ति, लोकतांत्रिक गुणों का विकास, व्यावहारिक कौशल आदि। इन सभी कौशलों तथा अभिवृत्तियों की जांच करना भी मूल्यांकन का एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है।

3. विद्यार्थियों की कमजोरियों को दिखाना (To show the weakness of Students) : सामाजिक अध्ययन इतना व्यापक विषय है कि कई बार अध्यापक को पता नहीं चलता कि कौन-सा विद्यार्थी सामाजिक अध्ययन के किस पक्ष-इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र आदि में कमजोर है। मूल्यांकन विद्यार्थियों की कमजोरियों को स्पष्ट रूप से दिखाकर विद्यार्थी और अध्यापक दोनों को उनकी ओर सचेत कर देता है।

4. उद्देश्यों की प्राप्ति का ज्ञान देना (To give knowledge regarding the attainment of aims)–'सामाजिक-अध्ययन-शिक्षण' के कई सामान्य और कई विशिष्ट उद्देश्य निर्धारित होते हैं। इन उद्देश्यों की प्राप्ति कहाँ तक हुई, इसकी जानकारी प्रदान करना 'मूल्यांकन' का एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है। इसकी जानकारी के आधार पर शिक्षण-विधियों तथा पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन किया जाता है।

5. विद्यार्थियों की रुचियों का ज्ञान देना (To give knowledge about the interest of the students)–सामाजिक अध्ययन के व्यापक क्षेत्र में विद्यार्थियों को उनकी रुचियों के अनुसार काम करने के पर्याप्त अवसर दिये जा सकते हैं, परन्तु उन की रुचियों का ज्ञान 'मूल्यांकन' द्वारा ही होता है। सामाजिक अध्ययन शिक्षण में कई प्रकार की अध्ययनात्मक रुचियों तथा रचनात्मक रुचियों का समावेश होता है। परन्तु किस विद्यार्थी में किन क्रिया तथा किस विषय के प्रति अधिक रुचि है–इसका ज्ञान, परीक्षण तथा मूल्यांकन से होता है। रुचियों का ज्ञान होने पर विद्यार्थियों को ठीक दिशा की ओर अग्रसर करना सुविधाजनक हो जाता है। इस प्रकार मूल्यांकन विद्यार्थियों के मार्गदर्शन में भी सहायक सिद्ध होता है।

उपर्युक्त लक्ष्यों को सम्मुख रखकर सामाजिक अध्ययन के 'मूल्यांकन' को आयोजित करना चाहिए। प्रायः देखा गया है कि अध्यापक के सम्मुख 'परीक्षण एवं मूल्यांकन' का केवल एक ही उद्देश्य रहता है कि उसके विद्यार्थी वार्षिक-परीक्षा में उत्तीर्ण हो जावें, परन्तु ऐसा सोचना 'मूल्यांकन' का अवमूल्यन करना होगा। यदि मूल्यांकन अपने सामान्य एवं विशिष्ट लक्ष्यों को पूरा नहीं करता तो उसका कोई लाभ नहीं होगा। अतः 'मूल्यांकन' आयोजित करने से पहले उसके लक्ष्यों को सुनिश्चित कर लेना चाहिए।

उद्देश्य

मूल्यांकन की प्रक्रिया विद्यालय शिक्षण में सुधार लाने के लिए आवश्यक है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी

ताकि वे मूल्यांकन से सुधार ला सकें। यह उद्देश्य परीक्षण एवं मापन की क्रिया के सीमित उद्देश्य से कहीं [illegible]
विस्तृत है। इसमें कोई संदेह नहीं कि जब विद्यार्थी अपनी दुर्बलताओं एवं कठिनाइयों को जान लेता है और
वह समझने लगता है कि उसे प्रगति की आवश्यकता है, तो वह प्रगति की ओर प्रयास में लग जाता है। [illegible]
की प्रक्रिया बहुत अधिक सीखने वाले की अपनी निजी अभिप्रेरणाओं पर निर्भर होती है। इसलिए यह [illegible]
की विधियों को आत्म-परीक्षण एवं भविष्य के कार्यों में आत्म-अभिप्रेरणा को प्रोत्साहित करता है [illegible]
प्रविधियों में ऊँचा स्थान देना चाहिए। अभिभावकों को भी विद्यार्थियों की प्रगति से अवगत कराना चाहिए,
वे अपने बालकों को अधिक अच्छे आत्म-अवबोधन प्राप्त करने में सहायता दे सकें।

2. शिक्षकों को विद्यार्थी के साथ कार्य करने के सम्बन्ध में निर्देशन प्रदान करना : शिक्षक [illegible]
की आवश्यकताओं को समझकर उनकी व्यक्तिगत रूप से सहायता कर सकता है। यह आवश्यकताएँ न [illegible]
विद्यार्थी के वर्तमान स्तर का मापन करके जानी जा सकती हैं, बल्कि [illegible] की उसकी प्रगति [illegible]
के ऊपर ध्यान देकर भी समझी जा सकती है। शिक्षक उस समय विद्यार्थियों को अच्छा अवबोधन प्रदान
सकता है, क्योंकि उसके पास मूल्यांकन के तत्व प्रस्तुत हैं। इसके साथ-साथ विद्यार्थी की प्रगति [illegible]
शिक्षक का विद्यार्थी के साथ अपने कार्य का मूल्यांकन करने में सहायता प्रदान करता है।

3. अभिभावकों को अपने बालकों के साथ कार्य करने के सम्बन्ध में निर्देशन प्रदान करना : अभि[illegible]
अपने बालकों को अपने कार्य का अवबोधन प्राप्त करने में तथा सुधार की योजना बनाने में [illegible]
कर सकते हैं। बुद्धिमान अभिभावक अपने बालकों की प्रगति की रिपोर्टों के संबंध में उनसे [illegible]
उनका वह बालकों को सजा देने या डराने-धमकाने के लिए प्रयोग में नहीं लाते। इसलिए अभिभावकों
बताना आवश्यक है कि विद्यार्थी की प्रगति [illegible] से हो रही है कि नहीं।

4. भविष्य के लिए अभिलेखों को रखना : मूल्यांकन के अभिलेखों को रखना अनिवार्य है,
आवश्यकता पड़ने पर विद्यार्थी शिक्षक एवं अभिभावक इसका प्रयोग कर सकते हैं तथा निर्देशनकर्ता
सूचित कर सकते हैं।

C.C.E की विधियाँ

[illegible] प्रत्येक मनुष्य का [illegible] बहुआयामी माना गया है। उसका वर्णन या मूल्यांकन किसी एक [illegible]
द्वारा नहीं किया जा सकता। इसके लिए मूल्यांकन की विभिन्न विधियों की आवश्यकता है। हमारे [illegible]
[illegible] दो या तीन बार परीक्षाएँ ली जाती हैं और न भी केवल [illegible] संबंधी योग्यता की जाँच [illegible]
बच्चे के व्यक्तित्व के बहुमुखी गुणों की परख की ओर ध्यान नहीं दिया जाता।
[illegible]
[illegible]
निम्नलिखित है-

(क) परीक्षाएं (Examinations) (ख) हर प्रकार के टेस्ट (All types of Tests)

परीक्षाएं–परीक्षा शब्द लैटिन शब्द (Examen) (तराजू की डण्डी) से लिया गया है। साधारण शब्दों में परीक्षा ज्ञान प्राप्ति और योग्यता दर्शाने का साधन है, चाहे इसे स्कूल के अध्यापक लें या कोई बाहरी संस्था। 7

परीक्षाओं के भेद :

(1) (i) आन्तरिक परीक्षाएं (Internal Examination)
    (ii) बाह्य परीक्षाएं (External Examination)
(2) (i) लिखित परीक्षाएं (Written Examination)
    (ii) मौखिक परीक्षाएं (Oral Examination)
    (iii) क्रियात्मक परीक्षाएं (Practical Examination)

इनकी बांट एक और प्रकार से भी की जा सकती है, जबकि इनको साधारण या विशेष योग्यता की पड़ताल के लिए प्रयोग किया जाता है।

1. व्यक्तिगत परीक्षाएं   2. सामूहिक टेस्ट
3. क्रियात्मक टेस्ट।

मूल्यांकन की कुछ और विधियां है–

1. रुचि परखने वाले टेस्ट (Interest Tests)–अमेरिका तथा अन्य प्रगतिशील देशों में ये एक नवीन प्रकार के टेस्ट बनाए गए हैं, जिनका प्रयोग करके यह जाना जा सकता है कि बच्चे का झुकाव किस कार्य में है। ऐसे टेस्ट तैयार करने के लिए हमारे देश में भी प्रयोग किए जा रहे हैं।

2. प्रवृत्ति अनुकूल जांच टेस्ट (Tendency Adoptation Tests)–बच्चों की प्रवृत्ति अनुकूलता की परख करने के लिए प्रश्न-पत्रों का प्रयोग किया जा सकता है। शिक्षाशास्त्रियों का विचार है कि बच्चे कई बार इसलिए पीछे रह जाते हैं कि उन्हें अपनी प्रवृत्तियों के अनुकूल वातावरण नहीं मिलता। इसके बारे में जानने के लिए प्रश्नों की एक सूची बनाई जाती है, जिसके प्रयोग से प्रतीत हो सकता है कि बच्चा स्कूल के वातावरण से ढल गया है, यदि ऐसा नहीं हुआ तो क्या त्रुटि है।

3. **रुचियों की जांच के लिए टेस्ट (Tests to check interests)–इस काम के लिए रुचि रिकार्ड** का प्रयोग किया जाता है। यह प्रश्नों की एक ऐसी सूची होती है, जिसके प्रयोग द्वारा विद्यार्थी की रुचि की जानकारी हो सकती है।

4. रेटिंग स्केल (Rating Scale)–यह व्यवहार को जानने का एक ढंग है। किसी एक अच्छे गुण जैसे (मेल-मिलाप) की जांच के लिए प्रत्येक बच्चे को अंक या चिह्न दिए जाते हैं, जिन के आधार पर भिन्न-भिन्न बच्चों की किसी एक गुण के विचार से कल्पना की जाती है। (Socio-metric) यंत्रों द्वारा भी बच्चों का आपस में मेल-मिलाप देखा जा सकता है।

5. प्रमाणित टेस्ट (Standardized Tests)–ये टेस्ट दो प्रकार के होते हैं–

(i) सफलता जांच टेस्ट (Success Check Tests) : यह एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा इस बात की पड़ताल की जाती है कि अमुक बच्चे ने अमुक विषय में कुछ सीख लिया है। इस टेस्ट द्वारा यह भी जाना जा सकता है कि बच्चे ने या सारी कक्षा ने स्कूल की पाठ्यान्तर क्रियाओं या पाठ्य विषयों में कितना ज्ञान प्राप्त किया? पश्चिमी देशों के स्कूलों में बच्चों की उन्नति की जांच के लिए ये टेस्ट कई रूपों में आते हैं।

(ii) निदानात्मक जांच (Clinical Check-Up)–इस टेस्ट के लिए पहले एक विषय का क्षेत्र नियुक्त किया जाता है। इसके उपरान्त उस क्षेत्र में से ही उसका एक भाग चुन लिया जाता है। इस टेस्ट की सहायता से उस छोटे भाग में व्यक्ति के गुणों और त्रुटियों का बोध हो सकता है। अध्यापक इसकी सहायता से यह जान लेता है कि उसका अध्यापन और बच्चों का पढ़ना कहां तक सफल रहा है। उदाहरणतया किसी भाग में गणित

5. निरीक्षण (Observation)–जब कार्य करने में [illegible] प्राप्त [illegible] हुई बातों का प्रयोग किस प्रकार कर सकते हैं आदि बातों का निर्णय करने के लिए [illegible] वह बच्चों का उस समय निरीक्षण करे, जबकि वे कार्य कर रहे हों। इस समय अध्यापक [illegible] सम्बन्ध में अपना अलग-अलग दृष्टिकोण बना सकता है, जो उसके काम का [illegible] सिद्ध होता है। उनके शिक्षा सम्बन्धी काम का मूल्यांकन करने के लिए निरीक्षण से [illegible] नहीं। इसके अतिरिक्त बच्चे के उन्नति के कार्ड, समय-समय पर उसके सम्बन्ध में नोट [illegible] और टेप आदि भी सहायक सिद्ध होते हैं। इन आकस्मिक नोट की गई बातों में कुछ [illegible] होता है, जो बच्चे ने स्कूल [illegible] में अनुभव की हुई हैं। इसके साथ-साथ सामूहिक [illegible] क्रियाओं में बच्चे के व्यवहार को देखकर इसका रिकार्ड रखा जाये, नोट बुक, [illegible] की आवश्यकता है।

मूल्यांकन के गुण

उत्तर–मूल्यांकन शिक्षा की प्रक्रिया का अत्यंत आवश्यक अंग है। इसके द्वारा हमें [illegible] शिक्षा के लक्ष्यों का स्पष्टीकरण, शिक्षा कार्य की उन्नति, मार्गदर्शन तथा पाठ्यक्रम में सुधार [illegible] मिलती है। परन्तु मूल्यांकन से ये लाभ तभी प्राप्त हो सकते हैं जब उसमें कुछ आवश्यक गुण [illegible] प्रकार के हो सकते हैं :

1. वैधता अथवा विषयानुकूलता (Validity) : अच्छे मूल्यांकन की पहली विशेषता उसकी [illegible] है। विषयानुकूलता से अभिप्राय यह है कि उस मूल्यांकन द्वारा उस ज्ञान और केवल उस ज्ञान [illegible] जाए जिसके लिए परीक्षा ली जा रही है। सामाजिक अध्ययन की शिक्षा में यह गुण परीक्षा के [illegible] होता है तब भाषा की कमजोरी तथा ऐसी ही किसी अन्य बात का विद्यार्थी द्वारा प्राप्त अंकों पर [illegible] वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में यह गुण विद्यमान होता है क्योंकि उन प्रश्नों की भाषा सरल होती है और इसी [illegible] समझना भी सरल होता है।

2. विश्वसनीयता (Reliability) : उत्तम मूल्यांकन की दूसरी विशेषता उसकी विश्वसनीयता [illegible] अभिप्राय यह है कि मूल्यांकन चाहे कोई भी करे और किसी भी समय करे, परिणाम सदा ही [illegible] [illegible] है कि यदि कोई और परीक्षक परीक्षा लेता है या यदि वही परीक्षक किसी और समय परीक्षा [illegible] परिणाम इससे भिन्न हों। मूल्यांकन में इस गुण के होने पर विद्यार्थी को इस बात का विश्वास [illegible] है कि उसको जितने अंक मिलने चाहिए थे उतने ही मिले हैं उससे कम अथवा अधिक नहीं।

3. वस्तुनिष्ठता (Objectivity) : उत्तम परीक्षा में वस्तुनिष्ठता का होना भी [illegible] अभिप्राय यह है कि प्रश्नों के उत्तर निश्चित हों और एक प्रश्न का उत्तर केवल एक ही हो [illegible] [illegible] परीक्षक की रुचि व अरुचि का प्रभाव न पड़े। [illegible] मूल्यांकन के इस गुण के होने पर विद्यार्थियों को इस बात की शिकायत नहीं [illegible] मिले हैं।

4. सरलता (Simplicity) : सरलता भी अच्छे मूल्यांकन की विशेषता है। [illegible]

[illegible] की जांच करता है कि विद्यार्थियों को पाठ अच्छी तरह से समझ में आ गया है कि नहीं। [illegible] कोई [illegible] याद करके लाने के लिए भी देता है और दूसरे दिन श्रेणी में उसे सुनता है अथवा लिखवा कर देखता है। इस प्रकार का मूल्यांकन सरल ही माना जाएगा।

5. विस्तृत रूप में (Comprehensive): विस्तृत का गुण ऐसा गुण है जिसका एक अच्छे मूल्यांकन में होना आवश्यक है परन्तु जिसका प्रचलित निबंधात्मक परीक्षाओं में अभाव है। इन परीक्षाओं में वर्ष भर के [illegible] की जांच तीन घंटे के थोड़े से समय में पांच या इससे भी कम निबंधात्मक प्रश्नों द्वारा करने का यत्न किया जाता है जो कि एक प्रकार से असंभव है। इसका परिणाम यह होता है कि पाठ्यक्रम के कुछ भाग बिल्कुल अछूते रह जाते हैं। कुछ प्रत्याशित (Expected) प्रश्नों को रट कर विद्यार्थी पास हो जाते हैं अथवा अच्छे [illegible] प्राप्त कर लेते हैं। जिन विद्यार्थियों को ये पांच प्रश्न नहीं आते उनको चाहे बाकी सारे प्रश्न आते हों वे [illegible] हो जाते हैं। इसके स्थान पर यदि अधिक संख्या में छोटे-छोटे प्रश्न समस्त पाठ्यक्रम में से पूछे जाएं तो परीक्षा में उचित वरण का गुण आ सकता है।

6. निदानात्मक (Diagnosticity): अच्छे मूल्यांकन में निदानात्मकता का होना भी आवश्यक है। निदानात्मकता से अभिप्राय यह है कि मूल्यांकन द्वारा हमें विद्यार्थियों के दोषों और न्यूनताओं का पता लग [illegible] और उनको दूर करने में सहायता मिले। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल यही बता देना नहीं है कि उनमें कितनी योग्यता है। इसके द्वारा उनको यह भी पता लग जाना चाहिए कि उनमें कौन-कौन सी कमियां हैं तथा वे उनको किस प्रकार दूर कर सकते हैं। इस प्रकार के मूल्यांकन का विद्यार्थियों को विशेष लाभ होता है तथा उनकी प्रगति में इससे सहायता मिलती है।

मूल्यांकन की विधियाँ

उत्तर–निबन्धात्मक परीक्षाओं के दोषों को देखते हुए एक अन्य प्रकार की शिक्षा का निर्माण किया गया है जिनमें छोटे-छोटे प्रश्न पूछे जाते हैं जिनके उत्तरों में या तो कुछ शब्द ही लिखने होते हैं या कुछ चिह्न विशेष बनाने होते हैं। इन प्रश्नों के उत्तर निश्चित होते हैं। परीक्षकों को इनका मूल्यांकन करने में किसी प्रकार की व्यक्तिगत छूट नहीं होती। प्रश्नों के उत्तर निश्चित होने और उनकी मूल्यांकन विधि निश्चित होने के कारण ये परीक्षाएं वस्तुनिष्ठ परीक्षाएं (Objective type tests) कहा जाता है। क्योंकि इन परीक्षाओं का निर्माण आधुनिक काल में किया गया है। इसलिए उनको नवीन परीक्षाएं (New type of tests) भी कहा जाता है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं के प्रकार
(Types of Objective Type Tests)

वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं के प्रश्नों को प्रायः दो भागों में बांटा जा सकता है :

1. पुनर्स्मृत्यात्मक प्रश्न (Recall type Questions)
2. पुनर्ज्ञानात्मक प्रश्न (Recognition type Questions)

1. पुनर्स्मृत्यात्मक प्रश्न भी दो प्रकार के होते हैं :
   (i) सरल पुनर्स्मृत्यात्मक प्रश्न (Simple Recall type)
   (ii) वाक्य पूर्ति प्रश्न (Sentence completion type Questions)

(iii) बहुविकल्पात्मक प्रश्न (Multi-choice type Questions)

(iv) [illegible] प्रश्न (Matching type Questions)

(v) चुनाव पूर्तिपात्मक प्रश्न (Multiple choice and completion type Questions)

वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं के विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के उदाहरण (Examples of different type [illegible]jective type Questions)

1. सरल पुनर्स्मृत्यात्मक प्रश्न (Simple Recall type Questions) : ये वे प्रश्न हैं जिनका [illegible] अपनी स्मरण-शक्ति से देते हैं। सामाजिक अध्ययन में [illegible] प्रश्न के परीक्षणों में यही [illegible] एक ही सीधा प्रश्न पूछा जाता है और उसका उत्तर भी [illegible] होता है, जैसे :

(i) पानीपत की तीसरी लड़ाई कब हुई?

(ii) भारत कब स्वतंत्र हुआ?

(iii) भाखड़ा बांध किस [illegible] में स्थित है?

(iv) भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री कौन हैं?

2. वाक्य पूर्ति प्रश्न (Sentence Completion Type Questions) : [illegible] या दो स्थान रिक्त छोड़ दिए जाते हैं और बच्चे अपनी स्मरण-शक्ति के आधार [illegible] है, जैसे :

प्रश्न–निम्नलिखित कथनों में जो स्थान रिक्त हैं उनमें सही शब्द लिखो।

(i) खानवा का युद्ध........तथा........के मध्य हुआ।

(ii) भारत का प्रथम [illegible] संग्राम........ई. में हुआ।

(iii) उड़ीसा में इस्पात का कारखाना........नगर में है।

(iv) भारत में सबसे अधिक वर्षा........में होती है।

3. वर्गीकृत प्रश्न (Classified Questions) : ये वे प्रश्न होते हैं जिनमें किसी एक वर्ग [illegible] नाम दिया जाता है और उनके बीच में उस वर्ग के अतिरिक्त किसी और [illegible] का नाम भी लिख [illegible] छात्रों को इस वर्ग में से उसे अलग करना होता है। इस प्रकार के प्रश्नों में पहचान (Recogni[illegible] प्रयोग अधिक करना पड़ता है।

उदाहरण (Example) : नीचे कुछ शब्द समूह दिए जा रहे हैं। वर्ग से अलग के शब्द को उसके सामने कोष्ठक में लिखो :

(i) भाखड़ा, हीराकुड, पूना, तुंगभद्रा, कोसी

(ii) भिलाई, [illegible], दुर्गापुर, राउरकेला

(iii) रामायण, महाभारत, अर्थशास्त्र, गीता

(iv) सोना, चाय, तांबा, चांदी, लोहा

4. सत्यासत्य प्रश्न (True and False Type Questions) : ये वे प्रश्न हैं जिनमें [illegible] असत्य सूचनाएं एक साथ लिख दी जाती हैं। इनके उत्तर में सत्य सूचनाओं के आगे (✓) का चिह्न [illegible] जाता है फिर 'हां' लिख दिया जाता है और असत्य सूचनाओं के आगे (✗) का चिह्न लगा दिया [illegible] [illegible] लिख दिया जाता है।

प्रश्न–नीचे [illegible] जो सत्य है उसके आगे (✓) का चिह्न लगाओ और जो अ[illegible] उसके आगे (✗) का चिह्न लगाओ।

(i) [illegible] था। [ ]

(ii) चंडीगढ़ पंजाब तथा हरियाणा की राजधानी है। [ ]

[illegible] के [illegible] में हिमालय पर्वत है। [ ]

5. बहुविकल्प प्रश्न (Multiple Choice Type Questions) : इस श्रेणी में वे प्रश्न आते हैं जिनमें किसी एक प्रश्न अथवा समस्या के अनेक समाधान विद्यार्थियों के सामने रख दिए जाते हैं और उन्हें सही उत्तर पर (√) का चिह्न लगाना होता है :

उदाहरण (Example) : भारत के राष्ट्रपति का चुनाव–

(i) भारत के सभी मतदाताओं द्वारा प्रत्यक्ष मतदान से होता है।
(ii) केवल लोकसभा के सदस्यों द्वारा होता है।
(iii) केन्द्रीय तथा प्रान्तीय विधायकों द्वारा होता है।
(iv) भारत का प्रधानमंत्री करता है।

6. सुमेल प्रश्न (Matching type Questions) : इन प्रश्नों के दो भाग होते हैं। एक ओर कुछ शब्द, विचार अथवा वाक्य रख दिए जाते हैं और दूसरी ओर उनका उत्तर या उससे संबंधित सूचनाएँ बिना किसी क्रम के रख दी जाती हैं। परीक्षार्थी दोनों में मिलान करके उन्हें ठीक क्रम में मिलाता है। इस प्रकार के प्रश्न उस समय अत्यंत सहायक होते हैं जब हम किसी विशिष्ट सूचना की परीक्षा लेना चाहते हैं और जहाँ पर पुनः स्मरण की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसके द्वारा दो तथ्यों में संबंध स्थापित करने की योग्यता एवं तथ्यों का वर्गीकरण करने की जांच भी भली-भांति हो सकती है।

उदाहरण (Example) : नीचे कुछ भारत के राज्यों और उनकी राजधानियों के नाम दिए गए हैं उनका मिलान करो।

	राज्य	राजधानी
1.	उत्तर-प्रदेश	बंगलौर
2.	मध्य प्रदेश	हैदराबाद
3.	गोआ	लखनऊ
4.	गुजरात	भोपाल
5.	कर्नाटक	अहमदाबाद
6.	आंध्र प्रदेश	पणजी

या नीचे कुछ प्रसिद्ध घटनाएं और उनके वर्ष दिए गए हैं उनका सही मिलान करें।

	घटना	वर्ष
1.	पानीपत की पहली लड़ाई	1627 ई.
2.	गुरु नानक देव का जन्म	1857 ई.
3.	शिवाजी का जन्म	216 ई. पूर्व
4.	भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम	1526 ई.
5.	कलिंग का युद्ध	1469 ई.

7. चुनाव और पूर्ति प्रश्न (Multiple choice and completion Questions) : ये प्रश्न बहुविकल्प प्रश्न के योग से बनाए जाते हैं :

उदाहरण (Example) :

प्रश्न–नीचे कुछ स्थान रिक्त हैं। इन स्थानों की पूर्ति उनके सामने कोष्ठों में दिए गए शब्दों का चुनाव करके कीजिए।

1. पानीपत की पहली लड़ाई......में हुई
   (1627 ई., 1857 ई., 1025 ई., 1526ई.)
2. महानदी बहुमुखी योजना......राज्य में है।
   (उड़ीसा, पंजाब, बिहार आन्ध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश)

टर्म के अनुसार पाठ्यक्रम- कक्षा नवीं (ब) (सी.बी.एस.ई. द्वारा जारी)

संकलित परीक्षा 1 (एस ए-1) हेतु भार विभाजन (अप्रैल-सितम्बर)	अंक	कुल भार %
विषयवस्तु	20	30%
अपठित बोध (दो अपठित गद्यांश एवं दो अपठित काव्यांश)	15	
व्याकरण 25	30	
पाठ्यपुस्तक 5		
पूरक पाठ्यपुस्तक से मूल्यपरक प्रश्न	25	
लेखन	90	20%
फ़ॉरमैटिव परीक्षा (एफ ए-1 व एफ ए-2)		50%
कुल भार		

संकलित परीक्षा 2 (एस ए-2) हेतु भार विभाजन (अक्टूबर-मार्च)	अंक	कुल भार %
विषयवस्तु	20	30%
अपठित बोध (अपठित गद्यांश एवं मुक्त पाठ्य पर आधारित)	15	
व्याकरण 25	30	
पाठ्यपुस्तक 5		
पूरक पाठ्यपुस्तक से मूल्यपरक प्रश्न	25	
लेखन		20%
फ़ॉरमैटिव परीक्षा (एफ ए-3 व एफ ए-4)	90	50%
कुल भार		

टिप्पणी:

1. संकलित परीक्षाओं का कुल भार 60 प्रतिशत तथा फ़ॉरमैटिव परीक्षाओं का कुल भार 40 प्रतिशत होगा। फ़ॉरमैटिव परीक्षाओं के 40 प्रतिशत में से प्रत्येक सत्र में 5 प्रतिशत भाग (संपूर्ण वर्ष में 10 प्रतिशत) श्रवण व वाचन कौशलों के परीक्षण हेतु आरक्षित होगा। शेष 30 प्रतिशत फ़ॉरमैटिव मूल्यांकन, पाठ्यचर्या के अन्य अंगों; जैसे पठन, लेखन, व्याकरण, पाठ्यपुस्तक व पूरक पाठ्यपुस्तक पर आधारित होगा। इसमें बोलने, सुनने, लिखने व बोध पर आधारित मौखिक, लिखित अथवा कार्यकलापों पर आधारित परीक्षण किया जा सकता है।
2. संकलित परीक्षा एक (एस ए-1) 90 अंकों की होगी। 90 अंकों को मूल्यांकन के पश्चात 30 अंकों में परिवर्तित कर लिया जाएगा तदुपरांत ग्रेड का निर्धारण किया जाएगा तथा संकलित परीक्षा दो (एस ए-2) 90 अंकों की होगी व 90 अंकों को मूल्यांकन के पश्चात 30 अंकों में से परिवर्तित करने के उपरांत ग्रेड का निर्धारण किया जाएगा।

संकलित परीक्षाओं हेतु परीक्षा विनिर्देशन (सी.बी.एस.ई. द्वारा जारी)

कक्षा नवीं

(20 अंक)

खंड-क : अपठित बोध

टर्म-1 के लिए

(क) दो अपठित गद्यांश (100 से 150 शब्दों के) (10 अंक)

(ख) दो अपठित काव्यांश (10 अंक)

पठन कौशल, गद्यांश व काव्यांश पर शीर्षक का चुनाव, विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर लघु उत्तरीय/वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएँगे।

टर्म-II के लिए

(क) अपठित गद्यांश (200 से 250 शब्दों का) (10 अंक)

(ख) मुक्त पाठ पर आधारित 2-5 दीर्घ/लघु प्रश्न (10 अंक)

पठन कौशल, गद्यांश व काव्यांश पर शीर्षक का चुनाव, विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर लघु प्रश्न एवं मुक्त पाठ्य सामग्री पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे।

खंड-ख : व्यावहारिक व्याकरण (15 अंक)

व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु संरचना आदि पर प्रश्न पूछे जाएँगे।

खंड-ग : पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग-1 व पूरक पाठ्यपुस्तक संचयन भाग-1 (30 अंक)

खंड-घ : लेखन (25 अंक)

अ. संकेत-बिंदुओं पर आधारित विषयों एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए विषयों पर 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद। (05 अंक)

ब. अभिव्यक्ति की क्षमता पर केंद्रित एक अनौपचारिक विषय पर पत्र। (05 अंक)

स. चित्र-वर्णन (20-30 शब्दों में) (05 अंक)

द. कोई एक स्थिति पर 50 शब्दों के अंतर्गत संवाद लेखन (05 अंक)

इ. विषय से संबंधित 20-25 शब्दों के अंतर्गत विज्ञापन लेखन (05 अंक)

कक्षा नौवीं हिन्दी 'ब'- संकलित एवं फ़ॉरमेटिव परीक्षाओं हेतु पाठ्यक्रम का विभाजन

क्रम सं.		प्रथम सत्र (अप्रैल से सितम्बर)			द्वितीय सत्र (अक्तूबर से मार्च)		
	व्याकरण	FA 1 (10)	FA2 (10)	SA I (30)	FA3 (10)	FA 4/ PSA (10)	SA II (30)
1.	वर्ण-विच्छेद (2 अंक)	✓	✓	✓			✓
2.	अनुस्वार (1 अंक) अनुनासिक (1 अंक)	✓	✓	✓			✓
3.	नुक्ता (1 अंक)	✓	✓	✓			✓
4.	उपसर्ग-प्रत्यय (3 अंक)		✓	✓	✓		✓
5.	संधि (4 अंक) दीर्घ, गुण		✓	✓	✓		✓
6.	विराम-चिह्न (3 अंक)	,	✓	✓	✓		✓
	पत्र लेखन अनौपचारिक (05 अंक)	✓		✓	✓		✓
	अनुच्छेद (05 अंक)	✓		✓			✓

		FA 1 (10)	FA2 (10)	SA I (30)	FA3 (10)	FA4/ PSA (10)	SA II (30)
			✓	✓	✓		✓
	चित्र-वर्णन (05 अंक)		✓	✓	✓		✓
	संवाद लेखन (05 अंक)		✓	✓	✓		✓
	विज्ञापन लेखन (05 अंक)						

पुस्तकें

1. पाठ्य पुस्तक : स्पर्श भाग-1 2. पूरक पुस्तक : संचयन-भाग-1

प्रश्नपत्र तैयार करने हेतु आधारभूत प्रारूप (अधिकतम अंक-90)

क्रम संख्या	प्रश्नों का प्रकार	अधिगम के परिणाम तथा परीक्षण कौशल	लघूत्तरात्मक/ बहुविकल्पीय (2/1 अंक)	लघूत्तरात्मक (3 अंक)	दीर्घ उत्तरात्मक (5 अंक)	कुल अंक	प्रतिशत लगभग
1	स्मृति (ज्ञानाधारित स्मृति के प्रयोग पर सरल प्रश्न)	• श्रवण, भाषण, पठन तथा लेखन कौशल	7	1	......	10	10
2	बोध (अर्थपूर्ण परिचित बोध पर आधारित प्रश्न)	• तर्क-वितर्क • विश्लेषणात्मक कौशल	4	2*	2*	20	22.5
3	अनुप्रयोग (नवीन स्थितियों में ज्ञान के अनुप्रयोग पर आधारित अनुमानिक प्रकार के प्रश्न)	• रचनात्मक कौशल, सार लेखन, व्याख्या करना	1	3*	2*	20	22.5
4	उच्च स्तरीय चिंतन कौशल (विश्लेषण एवं मूल्यांकन पर आधारित प्रश्न)	• मूल्यांकन स्पष्टीकरण, तुलना करना, भेद करना, उचित/अनुचित सिद्ध करना	2	1*	2*	15	17
5	रचनात्मक (निर्णय अथवा स्थिति के मूल्यांकन की क्षमता एवं बहुविषयात्मक)	• मूल्यपरक विचारों को अभिव्यक्त करना	......	......	5	25	28
		कुल	14	17	11	90	100

* अंकित प्रश्नों के उपभाग भी लिए जा सकते हैं।

टिप्पणी : कक्षा नौवीं के लिए संकलित परीक्षा 2 के प्रश्न पत्र में मुक्त पाठ्य के आकलन हेतु 2-5 दीर्घ/लघु प्रश्न सम्मिलित किए जाएँगे, जो कुल 10 अंक के होंगे। विद्यार्थियों को मामलों के अध्ययन (केस स्टडीज) पहले ही से उपलब्ध करवाए जाएँगे। केस स्टडीज विद्यार्थियों की विश्लेषणात्मक व उच्च स्तरीय चिंतन कौशलों के परीक्षण हेतु बनाई जाएँगी।

टर्म के अनुसार पाठ्यक्रम-कक्षा दसवीं 'ब' (सी.बी.एस.ई. द्वारा जारी)

संकलित परीक्षा 1 (एस ए-1) हेतु भार विभाजन (अप्रैल-सितम्बर)		कुल भार %
विषयवस्तु	अंक	
अपठित बोध	20	30%
व्याकरण	15	
पाठ्यपुस्तक 25 पूरक पाठ्यपुस्तक से मूल्यपरक प्रश्न 05	30	
लेखन	25	
फ़ॉरमैटिव परीक्षा (एफ ए-1 व एफ ए-2)		20%
कुल भार	90	50%

संकलित परीक्षा 2 (एस ए-2) हेतु भार विभाजन (अक्टूबर-मार्च)		कुल भार %
विषयवस्तु	अंक	
अपठित बोध	20	30%
व्याकरण	15	
पाठ्यपुस्तक 25 पूरक पाठ्यपुस्तक से मूल्यपरक प्रश्न 05	30	
लेखन	25	
फ़ॉरमैटिव परीक्षा (एफ ए-3 व एफ ए-4)		20%
कुल भार	90	50%

टिप्पणी:

1. संकलित परीक्षाओं का कुल भार 60 प्रतिशत तथा फ़ॉरमैटिव परीक्षाओं का कुल भार 40 प्रतिशत होगा। फ़ॉरमैटिव परीक्षाओं के 40 प्रतिशत में से प्रत्येक सत्र में 5 प्रतिशत भाग (संपूर्ण वर्ष में 10 प्रतिशत) श्रवण व वाचन कौशलों के परीक्षण हेतु आरक्षित होगा। शेष 30 प्रतिशत फ़ॉरमैटिव मूल्यांकन, पाठ्यचर्या के अन्य अंगों; जैसे पठन, लेखन, व्याकरण, पाठ्यपुस्तक व पूरक पाठ्यपुस्तक पर आधारित होगा। इसमें बोलने, सुनने, लिखने व बोध पर आधारित मौखिक, लिखित अथवा कार्यकलापों पर आधारित परीक्षण किया जा सकता है।

2. **संकलित परीक्षा एक (एस ए-1) 90 अंकों** की होगी। 90 अंकों को मूल्यांकन के पश्चात 30 अंकों में परिवर्तित कर लिया जाएगा तदुपरांत ग्रेड का निर्धारण किया जाएगा तथा संकलित परीक्षा दो (एस ए-2) **90 अंकों की होगी** व 90 अंकों **को मूल्यांकन** के पश्चात 30 अंकों में से परिवर्तित करने के उपरांत ग्रेड का निर्धारण किया जाएगा।

संकलित परीक्षाओं हेतु परीक्षा विनिर्देशन (सी.बी.एस.ई. द्वारा जारी)

खंड-क : अपठित बोध (20 अंक)

1. अपठित गद्यांश (200 से 250 **शब्दों** का) (12 अंक)
2. अपठित काव्यांश (08 अंक)

उपर्युक्त गद्यांश व काव्यांश पर शीर्षक का चुनाव, विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर लघु उत्तर वाले प्रश्न पूछे जाएँगे।

खंड-ख : व्यावहारिक व्याकरण (15 अंक)

व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर प्रश्न पूछे जाएँगे।

खंड-ग : पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग-2 व पूरक पाठ्यपुस्तक संचयन भाग-2 (30 अंक)

खंड-घ : लेखन (25 अंक)

अ. संकेत-बिंदुओं पर आधारित विषयों एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए विषयों पर **80 से 100** शब्दों में अनुच्छेद। (5 अंक)

ब. इस प्रश्न में औपचारिक विषय पर पत्र लिखने के लिए कहा जाएगा। यह प्रश्न अभिव्यक्ति की क्षमता पर केंद्रित होगा। (5 अंक)

स. किसी विषय पर 20-30 शब्दों में सूचना लेखन (5 अंक)

द. कई एक स्थिति पर 50 शब्दों के अंतर्गत संवाद लेखन (5 अंक)

इ. विषय से संबंधित 20-25 शब्दों के अंतर्गत विज्ञापन लेखन (5 अंक)

कक्षा दसवीं हिन्दी 'ब'- **संकलित** एवं फ़ॉरमेटिव परीक्षाओं हेतु पाठ्यक्रम का विभाजन

क्रम सं.		प्रथम सत्र (अप्रैल से सितम्बर)			द्वितीय सत्र (अक्तूबर से मार्च)		
	व्याकरण	FA 1 (10)	FA2 (10)	SA I (30)	FA3 (10)	FA4/ PSA (10)	SA II (30
1.	शब्द व पद में अंतर (2 अंक)	✓		✓			✓
2.	रचना के आधार पर वाक्यों का रूपांतरण (3 अंक)		✓	✓	✓		✓

		FA 1 (10)	FA2 (10)	SA I (30)	FA3 (10)	FA4/ PSA (10)	SA II (30)
3.	समास (4 अंक)		✓	✓			✓
4.	अशुद्धि शोधन (4 अंक)	✓		✓	✓		✓
5.	मुहावरे (2 अंक)	✓		✓	✓		✓
6.	पत्र लेखन (औपचारिक) (5 अंक)	✓		✓			✓
7.	अनुच्छेद लेखन (5 अंक)	✓		✓	✓		✓
8.	सूचना लेखन (5 अंक)		✓	✓	✓		✓
9.	संवाद लेखन (5 अंक)	✓		✓			✓
10.	विज्ञापन लेखन (5 अंक)		✓	✓	✓		✓

पुस्तकें :

1. पाठ्य पुस्तक : स्पर्श भाग-2
2. पूरक पुस्तक : संचयन भाग-2

टिप्पणी:

1. फ़ॉरमैटिव मूल्यांकन का अभिप्राय अधिगम के मूल्यांकन से है। इसलिए विद्यालय उपर्युक्त विभाजन का अपनी सुविधानुसार उपयोग कर सकते हैं।
2. फ़ॉरमैटिव मूल्यांकन से संबंधित सभी कार्यकलाप; जैसे विभिन्न प्रकार के शैक्षिक खेल, पहेली प्रतियोगिता, परियोजना (Project), भूमिका निर्वहन (Roleplay), कहानी लेखन, नाट्य रचनांतरण (Dramatisation), आदि कक्षा में अथवा विद्यालय में करवाए जाने वाले कार्यकलाप हैं। यदि कोई ऐसा कार्यकलाप है जिसमें विद्यालय से बाहर जाकर कार्य करने की आवश्यकता पड़ती है तो ऐसी स्थिति में यह कार्य शिक्षक के पर्यवेक्षण व मार्गदर्शन में होना चाहिए।

अधिगम सामग्री का अर्थ
(Meaning & Concept of Learning Materials

शिक्षण पद्धति को सफल एवं रोचक बनाने के लिए विभिन्न साधनों का प्रयोग किया जाता है। ये विभिन्न शिक्षण साधन ही शिक्षण को सह
हैं। शिक्षण सहायक सामग्री वे साधन हैं जिनके द्वारा छात्रों के लिए कठिन विषय को सरल, स्पष्ट एवं रोचक बनाया जाता है। इससे अध्याप
को सुविधा होती है। जहाँ विद्यार्थी की यह इच्छा होती है कि कम से कम समय और शक्ति लगाकर अधिक से अधिक अधिगम प्राप्त कर ले
भी यही चाहता है कि वह कुछ ऐसे उपाय करे, ऐसे उपकरणों अथवा सामग्री की सहायता ले, जिसके द्वारा वह विद्यार्थियों को कम से क
कम शक्ति लगाकर, अधिक से अधिक उपयुक्त ज्ञान प्रदान कर सके। प्रत्यक्ष अनुभवों की सहायता से ज्ञान प्राप्त करना या करवाना सदै
प्रत्येक वस्तु, स्थान आदि के बारे में प्रत्यक्ष रूप से जानकारी लेना समय, शक्ति तथा धन की दृष्टि से काफी खर्चीला, अनुपयोगी तथा
सिद्ध होता है। इसलिए हमें प्रतिरूपों (substitutes) की सहायता लेनी पड़ती है। दृश्य श्रव्य साधन (Audio-Visual aids)हमें ये प्र
और इन्हें दृश्य-श्रव्य साधन इसलिए कहते हैं क्योंकि ये देखने और सुनने की दोनों इन्द्रियों द्वारा प्रभावित होते हैं।

डेन्ट के अनुसार, "श्रव्य-दृश्य सामग्री वह है जो लिखित या बोली गई पाठ्य सामग्री को समझने में सहायता प्रदान करता है। (Audio-
those which help us in understanding the spoken or written study material)

इस प्रकार शिक्षण सहायक सामग्री वह साधन है जिसको अध्यापक इसलिए प्रयोग करता है ताकि वह छात्रों को सीखने के लिए
दे सके तथा पाठ में रूचि उत्पन्न कर सके। हर अध्यापक का यह प्रयत्न होता है कि उसका अध्यापन अधिक से अधिक प्रभावश
के शिक्षण का लक्ष्य होता है - प्रभावशाली संचार प्रक्रिया (Effective Communication Process) तथा अधिगम के उपयुक्त परिण
Learning Outcomes)। इन दोनों लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अध्यापक को विभिन्न प्रकार की सहायक सामग्री का प्रयोग करना पड़ता
सामग्री में वे सभी साधन, स्रोत तथा उपकरण आदि सम्मिलित हैं जो अध्यापक को उत्तम संचार तथा शिक्षण लक्ष्यों की प्राप्ति में सहाय

अधिगम सामग्री की आवश्यकता एवं महत्त्व
(Need and Importance of Learning Materials

- **ध्यान केन्द्रित करना** (Concentration of Mind) - कक्षा में विद्यार्थियों के ध्यान को केन्द्रित करना अति आवश्यक होता है। इस
सामग्री की बहुत आवश्यकता पड़ती है। छोटी कक्षाओं में बच्चों का मन बहुत चंचल होता है तथा उन्हें किसी कार्य में व्यस्त करना
है। इस दृष्टि से सहायक सामग्री की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। सहायक सामग्री का सावधानीपूर्ण किया गया प्रयोग बहुत प्रभाव
है। अतः जब कक्षा में विद्यार्थियों का ध्यान या मन इधर-उधर भटकने लगता है तो इस तरह की सामग्री का प्रयोग किया जा सकता
- **अभिप्रेरणा के लिए** (For Motivation) - अधिगम-सिद्धान्तों (Learning Theories) ने यह सिद्ध कर दिया है कि किसी भी कार्य
के लिए अभिप्रेरणा का उत्पन्न होना अति आवश्यक होता है। इस प्रक्रिया के बिना किसी भी कार्य को न तो प्रभावशाली ढंग से किय
और न ही सफलतापूर्वक उसे सीखा जा सकता है। कक्षा में विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करना इतना आसान कार्य नहीं
शिक्षक को कई प्रकार की क्रियाएं करनी पड़ती हैं। इन क्रियाओं में सहायक सामग्री का प्रयोग आवश्यक सा होता जा रहा है। अनुभ
ने यह सिद्ध कर दिया है कि इन साधनों का कार्य बहुत प्रभावी रहता है। उदाहरणार्थ - यदि शिक्षक कक्षा में कोई नया मॉडल या च
तो सभी विद्यार्थी उसे देखने के लिए उत्सुक दिखाई पड़ते हैं।
- **क्रिया करने का अवसर** (Opportunities for Activities) - दृश्य-श्रव्य सामग्री की आवश्यकता हमें तब और भी ज्यादा महसूस होती
को कुछ क्रियाएं करवानी होती हैं। अतः सहायक सामग्री के प्रयोग से विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की क्रियाएं करने के अवसर प्राप्त होते
- कोई चलचित्र दिखाने के पश्चात् विद्यार्थी उस पर वाद-विवाद करने का अवसर प्राप्त करते हैं। क्रिया के इस सिद्धान्त के प्रयोग से विद्यार्थियों
सक्रिय हो जाती हैं, जैसे - बोलना, चलना, प्रश्न पूछना, देखना, सुनना आदि। इन्द्रियों की इस सक्रियता के परिणामस्वरूप विद्यार्थी पाठ में रु
- **रटने की प्रवृत्ति को कम करना** (To Reduce Craming) - प्रभावी अधिगम के लिए विद्यार्थियों में स्थाई अधिगम का होना बहुत ही आवश्
गम तभी सम्भव है जब विद्यार्थी रटने की प्रवृत्ति को त्यागें और समस्त विषय सामग्री को समझकर याद करें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए
की आवश्यकता सदा ही बनी रहती है। स्वयं क्रिया करने से, अभिप्रेरित होकर सीखने से तथा अपने मन को केन्द्रित करके सीखने से
की प्रवृति स्वयं ही कम होती चली जाएगी। इस समस्त प्रक्रिया में सहायक सामग्री का विशेष महत्त्व एवं विशेष योगदान होता है। इससे विद्या
एवं चिंतनशीलता, कल्पना आदि विशेषताओं का विकास होता है।

- **शब्द भण्डार में वृद्धि** (Increase in Vocabulary) – दृश्य-श्रव्य सामग्री के प्रदर्शन के दौरान विद्यार्थी नए-नए शब्दों को सुनता है, पढ़ता है तथा उन्हें याद करता है। इससे उन विद्यार्थियों के शब्द-भण्डार में भारी वृद्धि होती रहती है। अतः विद्यार्थियों के शब्द भण्डार में वृद्धि करने के लिए सहायक-सामग्री का प्रदर्शन अति आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण माना गया है। उदाहरणार्थ – विद्यार्थी जब रेडियो से रेडियो-पाठ सुनते हैं तो उस पाठ में कोई न कोई नया शब्द प्रयुक्त होता ही है, जिन्हें सुनकर विद्यार्थी अपने शब्द भण्डार में वृद्धि कर सकते हैं।
- **शिक्षण में कुशलता के लिए** (For Efficiency in Teaching) – शिक्षण की कुशलता से अभिप्राय है – सफल शिक्षण अर्थात् प्रभावशाली अधिगम। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु दृश्य-श्रव्य सामग्री की आवश्यकता महसूस की जाती है। सहायक सामग्री इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है कि इसके प्रयोग से शिक्षकों में आत्मविश्वास पैदा होता है, उनमें कुशलता की भावना आती है और वे पाठ को अधिक से अधिक रुचिकर बनाने में प्रयत्नशील रहते हैं।
- **सार्थक अनुभवों के लिए** (For Providing Meaningful Experiences) – कक्षा में यह आवश्यक होता है कि विद्यार्थी अधिगम प्रक्रिया को और शिक्षक को शिक्षण क्रियाओं को बोझ न मानें और वे इनका आनन्द उठाएं तथा सुखद अनुभव करें। इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु सहायक सामग्री का प्रयोग ही महत्त्व रखता है। सहायक सामग्री के प्रयोग से विद्यार्थियों को सार्थक अनुभव प्रदान किए जा सकते हैं, जिससे वे सुखद अनुभव महसूस करते हैं। इससे विद्यार्थी प्रसन्नता महसूस करते हैं तथा उनमें मौलिक चिंतन का विकास होने लगता है।
- **अधिगम के स्थानांतरण में सहायक** (Helps in Transfer of Learning) – कक्षा में सीखा गया या अर्जित किया गया ज्ञान अन्य परिस्थितियों में प्रयोग करने से ज्ञान स्थाई होता है। इसे अधिगम का स्थानान्तरण भी कहते हैं। कक्षा में अधिगम-स्थानान्तरण के लिए सहायक सामग्री के प्रयोग की अति आवश्यकता होती है।
- **स्पष्टता के लिए** (For Clarity) – कई विषयों की सामग्री इतनी कठिन एवं जटिल होती है कि उन्हें केवल व्याख्यान (Lecture) द्वारा स्पष्ट करना मुश्किल होता है। अतः इस प्रकार की कठिन और जटिल विषय सामग्री तथा सिद्धान्तों को स्पष्ट करने के लिए सहायक सामग्री का प्रयोग आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है, क्योंकि इसके प्रयोग से विद्यार्थी स्वयं अपनी आँखों से अपने सामने ही सब कुछ देख सकते हैं, जैसे – विज्ञान के विषयों में प्रयोगशाला में प्रयोग किए जाते हैं या कक्षा में कोई प्रयोग करके दिखाया जाता है।
- **अधिक ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग** (Use of Maximum Senses) – कक्षा में अधिकतम अधिगम (Maximum Learning) के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी अपनी अधिक से अधिक ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग करे अर्थात् पूर्ण रूप से सक्रिय हो जाए। इस कार्य के लिए यह आवश्यक है कि कक्षा में शिक्षक दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग अवश्य करे।
- **समय और शक्ति की बचत** (To Save Time and Energy) – कठिन विषय-वस्तु को शीघ्र से शीघ्र स्पष्ट करना शिक्षक के लिए आवश्यक होता है। यदि शिक्षक किसी विषय के सिद्धान्तों को शीघ्रता से स्पष्ट नहीं कर पाता तो इससे समय एवं शक्ति दोनों ही नष्ट होते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी शिक्षकों को अकुशल भी मानने लगते हैं और कक्षा में अनुशासनहीनता का-सा वातावरण बन जाता है। अतः समय और शक्ति की बचत के लिए कक्षा में दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग करना आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है।
- **वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास** (To Develop Scientific Attitude) – कक्षा में शिक्षक हार्डवेयर (Hardware) के प्रयोग से तथा तकनीकी सिद्धान्तों पर आधारित अन्य सामग्री के विधिवत् प्रयोग से विद्यार्थियों में वैज्ञानिक आवृत्ति (Scientific Attitude) का विकास सम्भव होता है। वर्तमान वैज्ञानिक युग में वैज्ञानिक आवृत्ति का विकास बहुत ही आवश्यक और महत्त्वपूर्ण हो गया है।
- **अनुशासनहीनता को नियंत्रित करने के लिए** (To Control Indiscipline) – कई परिस्थितियों में कक्षा में उत्पन्न अनुशासनहीनता शिक्षकों की अलोकप्रियता, अकुशलता, अरुचिकर शिक्षण से तथा त्रुटिपूर्ण शिक्षण विधि के कारण होती है। इस अनुशासनहीनता को नियंत्रित करना अति आवश्यक होता है। इस कार्य के लिए कक्षा में सहायक सामग्री का प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है। इसके प्रयोग से इस समस्या के समाधान में शिक्षक को काफी सहायता मिलती है।

अधिगम सामग्री का वर्गीकरण
Classification of Learning Materials

शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया को रोचक, सरल और प्रभावपूर्ण बनाने के लिए शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग किया जाता है। इस शिक्षण सहायक सामग्री को भली प्रकार से समझने के लिए इसके वर्गीकरण तथा प्रयोग को समझना अति आवश्यक है। शिक्षण सहायक सामग्री का वर्गीकरण दो निम्नलिखित आधारों पर किया जा सकता है –

(I) **इन्द्रियों के प्रयोग के आधार पर** (Based on the use of senses)

(II) **तकनीकी के आधार पर** (Based on Technology)

(I) **इन्द्रियों के प्रयोग के आधार पर वर्गीकरण** (Based on the use of senses) – इन्द्रियों के प्रयोग के आधार पर शिक्षण सहायक सामग्री को चार उपभागों में बांटा जा सकता है। ये शिक्षण साधन निम्नलिखित हैं–

(i) **श्रव्य सहायक सामग्री** (Audio Aids)

(ii) **दृश्य सहायक सामग्री** (Visual Aids)

(iii) दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री (Audio-Visual Aids)

(iv) क्रियात्मक सहायक सामग्री (Activity Aids)

(i) **श्रव्य सहायक सामग्री** (Audio Aids) - ये वे साधन हैं जिन्हें सुनकर बच्चे प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्राप्त करते हैं। ये साधन सुनकर की सहायता करते हैं। ये साधन श्रव्य इन्द्रियों को प्रभावित करते हैं। श्रव्य साधन निम्नलिखित हैं :

1. रेडियो (Radio) 2. टेप रिकॉर्डर (Tape-Recorder) 3. ग्रामोफोन (Gramophone)
4. लिंग्वाफोन (Linguaphone) 5. लाऊड स्पीकर (Loud Speaker)

(ii) **दृश्य सहायक सामग्री** (Visual Aids)

ये वे साधन हैं जिन्हें देखकर छात्र ज्ञान प्राप्त करते हैं। ये साधन चक्षु इन्द्रियों, को प्रभावित करते हैं और छात्रों को देखकर सीखने में हैं। दृश्य साधनों को दो उप-श्रेणियों में बांटा जा सकता है -

(a) **गैर प्रक्षेपी साधन** (Non-Projective Aids)- गैर प्रक्षेपी वे साधन होते हैं जो प्रत्यक्ष रूप से चक्षु-इन्द्रियों को प्रभावित करते दृश्य साधन निम्नलिखित हैं -

1. चार्ट (Chart) 2. चित्र (Picture) 3. मानचित्र (Maps)
4. मॉडल (Model) 5. ग्राफ (Graph) 6. पोस्टर (Poster)
7. ग्लोब (Globe) 8. नमूने (Specimen) 9. पाठ्य पुस्तक के चित्र (Text book
10. संग्रहालय (Museum) 11. चाक बोर्ड (Chalk Board) 12. बुलेटिन बोर्ड (Bulletin Board)
13. फलेनल बोर्ड (Flannel Board) 14. कार्टून (Cartoon)

(b) **प्रक्षेपी साधन** (Projective Aids) - प्रक्षेपी साधनों में वे उपकरण शामिल किए जाते हैं, जिन्हें किसी वस्तु को पर्दे पर प्रक्षेपित में दिखाए जाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। प्रक्षेपी दृश्य साधन निम्नलिखित हैं -

1. फिल्म पट्टिया (Film Strips) 2. मूक चलचित्र (Silent Pictures) 3. एपीस्कोप (Episcope)
4. एपीडायस्कोप (Epidiascope) 5. जादुई लालटेन (Magic Lantern) 6. सूक्ष्म प्रक्षेपी (Micro Projector
7. अपारदर्शी प्रक्षेपी (Opaque Projector) 8. शिरोपरि प्रक्षेपी (Overhead Pro

(iii) **दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री** (Audio-Visual Aids) - दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री वे साधन होते हैं जो हमारी चक्षु तथा श्रवण दोनों को एक साथ प्रभावित करते हैं। ये साधन सुनकर तथा देखकर दोनों तरह से छात्रों को सीखने में सहायता करते हैं। दृश्य श्रव्य साधन हैं -

1. दूरदर्शन (Television) 2. बोलते चलचित्र (Sound Motion Pictures)
3. सिनेमा (Cinema) 4. सिन्क्रोनाइज्ड ध्वनि पट्टी प्रक्षेपी (Synchronised Audio-Slide Pr

(iv) **क्रियात्मक सहायक सामग्री** (Activity Aids) - क्रियात्मक सहायक सामग्री वे साधन हैं जो देखने, सुनने तथा करने व अधिगम को में सहायता करते हैं। क्रियात्मक साधनों के उदाहरण निम्नलिखित हैं -

1. भूमिका निर्वाह (Role Playing)
2. अभिनय करना (Dramatisation)
3. प्रयोगशाला तथा कार्यशाला में काम करना (To work in a Laboratory and Workshop)
4. चिड़ियाघर का भ्रमण (A visit to a zoo)
5. मेले तथा प्रदर्शनियाँ (Fairs and Exhibitions)

(II) **तकनीकी के आधार पर वर्गीकरण** (Classification Based on Technology) - तकनीकी के आधार पर शिक्षण साधनों को तीन भागों में बांटा जा सकता है-

(i) सरल हार्डवेयर (Simple Hardware)

(ii) जटिल हार्डवेयर (Complex Hardware)

(iii) सोफ्टवेयर (Software)

(i) **सरल हार्डवेयर** (Simple Hardware) - सरल हार्डवेयर में निम्नलिखित साधन शामिल किए जाते हैं -

1. एपीस्कोप (Episcope) 2. डायस्कोप (Diascope) 3. जादुई लालटेन (Magic Lantern)
4. एपीडायस्कोप (Epidiascope) 5. शिरोपरि प्रक्षेपी (Overhead Projector)

6. स्लाईड प्रक्षेपी (Slide Projector) 7. अपारदर्शी प्रक्षेपी (Overhead Projector)
8. फिल्म पट्टी प्रक्षेपी (Film Strip Projector)

(ii) जटिल हार्डवेयर (Complex Hardware) - जटिल हार्डवेयर में निम्नलिखित साधन शामिल किए जाते हैं -

1. रेडियो (Radio) 2. टेलीविजन (Television) 3. चलचित्र (Motion Pictures)
4. कम्प्यूटर (Computer) 5. सिनेमा (Cinema) 6. टेप रिकार्डर (Tape-Recorder)
7. शिक्षण मशीन (Teaching Machine)8. रिकार्ड प्लेयर (Record Player)

(iii) सोफ्टवेयर (Software) - सॉफ्टवेयर के अन्तर्गत निम्नलिखित साधन शामिल किए जाते हैं -

1. स्लाईड (Slides) 2. फिल्म पट्टियां (Film Strips) 3. चित्र (Pictures)
4. मानचित्र (Maps) 5. आलेख (Graph) 6. कार्टून (Cartoons)
7. चार्ट (Charts) 8. मुद्रित सामग्री (Printed Material) 9. नमूने (Models)
10. अभिक्रमित सामग्री (Programmed Material)

अधिगम सामग्री तैयार करने के लिए आवश्यक वस्तुएँ
(Material required for Learning Materials

शिक्षण सहायक सामग्री के निर्माण में बहुत सी वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है। कुछ साधनों का निर्माण आसानी से किया जा सकता है। शिक्षण सहायक सामग्री के निर्माण में निम्नलिखित सामग्री की आवश्यकता पड़ती है -

1. कागज (Paper)

कागज आवश्यकता के अनुसार होना चाहिए। यह अधिक मोटा नहीं होना चाहिए। कागज का रंग सफेद होना चाहिए ताकि इस पर जो भी कुछ अंकित किया जाए वह स्पष्ट नजर आ सके। कागज कई प्रकार का हो सकता है, जैसे - सादा कागज, चार्ट कागज, हैंडमेड सीट, तैलीय पेपर आदि। दृश्य सामग्री बनाने के लिए किसी भी माध्यम का प्रयोग किया जा सकता है। चार्ट पेपर एक तरफ से चिकना व दूसरी तरफ से खुरदरा होता है। चार्ट पेपर पर रंगों एवं स्कैच पैन से चित्र बनाए जा सकते हैं। Hard sheet महंगा कागज है। इसके अलावा काली शीट तथा चार्ट शीट पर कुछ अन्य सामग्री लगाकर चित्र बनाए जा सकते हैं।

2. रंग (Colour)

चार्ट बनाने के लिए रंगों की आवश्यकता पड़ती है। मुख्यत: रंग तीन प्रकार के होते हैं-

1. **प्राथमिक रंग** - लाल, पीला और नीला प्राथमिक रंग हैं जो प्रकृति में पाए जाते हैं। इन्हें मनुष्य नहीं बना सकता।
2. **सहायक रंग** - सहायक रंग दो या दो से अधिक रंगों के मेल से बनता है। जैसे गुलाबी, सन्तरी, बैंगनी आदि।
3. निरपेक्ष रंग - यह काला तथा सफेद रंग है, जो रंगों को हल्का या गहरा करने के काम आते हैं। स्लेटी रंग भी निरपेक्ष रंगों में आता है।

3. स्केल (Scale)

सीधी रेखाओं को खींचने के लिए तथा नाप व अनुपात में दृश्य सामग्री बनाने के लिए स्केल या फुटे का प्रयोग किया जाता है। इसके एक तरफ इंच तथा दूसरी तरफ से०मी० अंकित होते हैं।

4. पैंसिल (Pencil)

चार्ट बनाने के लिए पैंसिल का प्रयोग किया जाता है। कोई भी आकृति पहले पैंसिल से बनाई जाती है। चार्ट बनाने के लिए बढ़िया पैंसिल का प्रयोग करना चाहिए। घटिया पैंसिल का प्रयोग करने से कागज फट सकता है। पैंसिल न तो ज्यादा कठोर होनी चाहिए और न ही ज्यादा नरम होनी चाहिए। नरम पैंसिल जल्दी टूट जाती है।

5. रबड़ (Eraser)

चार्ट आदि बनाने के लिए रबड़ का प्रयोग किया जाता है। किसी भी चित्र को सही आकार देने के लिए बार-बार रबड़ से मिटाना पड़ता है। रबड़ बढ़िया होना चाहिए। रबड़ ज्यादा कठोर नहीं होना चाहिए, जिससे कागज फट न जाए। रबड़ ज्यादा नरम भी नहीं होना चाहिए। नरम रबड़ का बार-बार टूटने का भय रहता है। रबड़ ऐसा होना चाहिए जिससे अच्छी तरह से सफाई की जा सके।

अधिगम सामग्री का प्रभावशाली प्रयोग
(Effective use of Learning materials

शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग तभी सार्थक सिद्ध हो सकता है जब इन्हें प्रयोग करते समय सावधानी से काम लिया जाए। दृश्य-श्रव्य साध
प्रयोग करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है -

1. **शिक्षण साधन अध्ययन के प्रकरण से सम्बन्धित होना चाहिए** (The teaching aid should be dealt with the topic under

अध्यापक को शिक्षण साधनों का प्रयोग करते समय अध्ययन के प्रकरण का विशेष ध्यान रखना चाहिए। अध्यापक को उसी शि
प्रयोग करना चाहिए जो पाठ से पूरी तरह से सम्बन्धित हो। साधन अध्ययन किए जाने वाले प्रकरण से इस प्रकार सम्बन्धित होना
प्रकरण के सभी पहलुओं को अच्छी तरह से स्पष्ट करें। यदि शिक्षण साधनों के प्रयोग में अध्ययन किए जाने वाले प्रकरण को पू
नहीं किया जाता है तो बच्चों में भ्रान्ति पैदा हो सकती है।

2. **शिक्षण साधन नवीनतम होने चाहिए** (Aids should be up-to-date)

शिक्षण साधनों का प्रयोग करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि साधन नवीनतम है या नहीं। हमारा समाज परिवर्तनशील है औ
नए-नए आविष्कार हो रहे हैं। पुराना उपकरण नवीनतम जानकारी देने में असमर्थ होता है। अध्यापक को चाहिए कि वह शिक्षण सामग्री के
नवीनता का ध्यान रखे।

3. **शिक्षण साधन विद्यार्थियों की बुद्धि एवं अनुभव के अनुसार होने चाहिए**
(Teaching aids must be according to the experience and intelligence of the learners)

शिक्षण साधनों का प्रयोग करते समय यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि प्रयोग किए जा रहे शिक्षण साधन विद्यार्थियों की बुद्धि और अनु
होने चाहिए। उदाहरण के लिए यदि फिल्म स्ट्रीप का प्रयोग छोटी कक्षाओं में किया जाए तो वह प्रभावशाली नहीं हो सकता। छोटी कक्षा
प्रयोग ज्यादा प्रभावशाली रहता है। कक्षा में उसी शिक्षण साधन का प्रयोग किया जाना चाहिए, जिसे छात्रों को समझने में कोई किसी प्रका
न हो और उसे भलीभांति समझ सकें।

4. **शिक्षण साधन को कक्षा में प्रयोग करने से पहले अच्छी तरह जांच कर लेना चाहिए**
(Teaching aid should be checked up before using it in the class)

शिक्षण साधन को प्रयोग करने से पहले उसकी अच्छी तरह से जाँच कर लेनी अति आवश्यक है। यदि कोई मशीनी शिक्षण साधन कि
खराबी के कारण कक्षा-कक्ष में सुचारू रूप से नहीं चल पाता है तो पढ़ाए जाने वाले विषय की प्रभावशीलता कम हो जाती है। अतः कि
साधन का कक्षा-कक्ष में प्रयोग करने से पहले उसकी जाँच करना अति आवश्यक है।

5. **एक साथ कई साधनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए** (Too many aids should not be used at one time)

अध्यापक को कक्षा-कक्ष में एक साथ कई शिक्षण साधनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से पाठ नीरस और उबाऊ हो सकता
और अध्यापक का समय भी नष्ट होता है। उन्हीं शिक्षण साधनों का प्रयोग करना चाहिए जो पाठ के विस्तारपूर्वक वर्णन करने में सहायता प्रद

6. **साधनों का चुनाव करते समय विद्यार्थियों के परिवेश को ध्यान में रखना चाहिए**
(Environment of students should be kept in mind while selecting the aids)

अध्यापक को इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि प्रयोग किया जाने वाला शिक्षण साधन विद्यार्थियों के परिवेश के अनुरूप है या नहीं। कोई
साधन प्रभावशाली नहीं हो सकता यदि वह विद्यार्थियों के परिवेश से सम्बन्धित नहीं है। उदाहरण के लिए, यदि बच्चों को कृषि के बारे में
तो बच्चों को विदेशों में कृषि पर बनी फिल्में नहीं दिखानी चाहिए। विदेशों में बनी कृषि के बारे में फिल्मों में वे उपकरण प्रयोग में नहीं लाए ज
प्रयोग भारत में होता है।

7. **पाठ की तीन अवस्थाओं का प्रयोग** (Use in three stages of the lesson)

शिक्षण साधनों का प्रयोग पाठ की तीन अवस्थाओं के अनुसार करना चाहिए। ये अवस्थाएं हैं -

(i) प्रस्तावना (Introduction)

(ii) प्रस्तुतीकरण (Presentation)

(iii) पुनरावृत्ति (Recapitulation)

इन तीनों अवस्थाओं में शिक्षण साधन के प्रयोग करने के विभिन्न उद्देश्य होते हैं। प्रस्तावना में शिक्षण साधन का प्रयोग विद्यार्थियों को पाठ में
करने के लिए किया जाता है। प्रस्तुतीकरण की अवस्था में शिक्षण साधन का प्रयोग सूक्ष्म तथ्यों, कठिन भावों आदि को विद्यार्थियों के सम्मुख स्प
के लिए किया जाता है। पुनरावृत्ति की अवस्था में शिक्षण साधन का प्रयोग किया जाता है, ताकि पढ़ाया गया पाठ विद्यार्थियों को अच्छी
याद हो सके।

8. **शिक्षण साधनों का प्रयोग छात्रों की आवश्यकता के अनुसार किया जाना चाहिए**
(Teaching Aids should be used according to the need of the students)
कक्षा में शिक्षण साधनों का प्रयोग तभी किया जाना चाहिए जब उनकी आवश्यकता महसूस हो। बिना आवश्यकता के शिक्षण साधनों का प्रयोग प्रभा[illegible] हो जाता है और इससे समय भी नष्ट होता है। इसके साथ-साथ कक्षा में अनुशासनहीनता फैलने की सम्भावना भी बढ़ जाती है।

9. **सरलता तथा उपलब्धता** - (Simplicity and Availability)
अध्यापक को कक्षा में ऐसे शिक्षण साधनों का प्रयोग करना चाहिए जो प्रयोग करने में सरल हों और आसानी से उपलब्ध हो सकें। ऐसे शिक्षण [illegible] जो अध्यापक खुद भी तैयार कर सकता है और विद्यार्थियों से भी तैयार करवा सकता है। जो शिक्षण साधन आसानी से उपलब्ध नहीं होते वे अधि[illegible] महंगे भी होते हैं। खर्चीले साधन के प्रदर्शन तथा प्रयोग में समय और धन नष्ट नहीं करना चाहिए।

10. **शिक्षण साधन के प्रभाव की सम्भावना** - (Possibility of Influences of Teaching aids)
कक्षा में शिक्षण साधन के प्रयोग से पहले अध्यापक को इस बात का अनुमान लगा लेना चाहिए कि प्रयोग किए जाने वाले शिक्षण साधन का [illegible] विद्यार्थियों पर पड़ने की सम्भावना है या नहीं। सही निष्कर्ष निकालने के बाद ही शिक्षण साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

11. **अवलोकन और चिन्तन के लिए पर्याप्त समय** - (Sufficient time for Thinking and Observation)
शिक्षण साधनों का चुनाव करते समय अध्यापक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि शिक्षण साधन का अवलोकन तथा चिन्तन करने के लिए [illegible] समय है या नहीं। अध्यापक को किसी विषय को स्पष्ट करने के लिए उसी शिक्षण साधन का प्रयोग करना चाहिए जिस का निर्धारित समय में अव[illegible] तथा चिन्तन किया जा सके।

12. **प्रदर्शन के बाद शिक्षण साधनों को हटा देना चाहिए** - (Teaching aids should be removed after displaying)
अध्यापक को शिक्षण साधनों के प्रयोग करने के बाद उन्हें उस स्थान से हटा देना चाहिए, क्योंकि ऐसा न करने से बच्चों का ध्यान बार-बार उस [illegible] साधन पर जाएगा और विषय से ध्यान हट जाएगा। शिक्षण साधन के प्रयोग करने के बाद उसे सुरक्षित स्थान पर रख देना चाहिए।

13. **शिक्षण साधन प्रस्तुत करने का ढंग** - (Way of presenting Teaching Aid)
किसी शिक्षण साधन को प्रस्तुत करने का तरीका सही होना चाहिए। अध्यापक को शिक्षण साधन को ऐसी जगह पर रखना चाहिए जहाँ से वह क[illegible] सभी विद्यार्थियों को स्पष्ट रूप से दिखाई दे सके। एक अच्छे से अच्छा शिक्षण साधन भी निरर्थक सिद्ध हो सकता है, यदि उसे अच्छी तरह से [illegible] नहीं किया जाए। शिक्षण साधन प्रस्तुत करने के बाद अध्यापक को सम्बन्धित विद्यार्थियों से प्रश्न पूछने चाहिए।

आदिगम सामग्री तैयार करना
Preparing Learning materials

विभिन्न प्रकार की शिक्षण सहायक सामग्रियां, विभिन्न विधियों द्वारा तैयार की जाती हैं। विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री को तैयार करने के लिए अनेक [illegible] की विधियों और सावधानियों की आवश्यकता होती है।

श्यामपट्ट (Black-Board)

श्यामपट्ट एक ऐसी काले रंग की आकृति होती है, जो लकड़ी, प्लास्टिक, गत्ते, सिमेंट या धातु की बनी होती है। इस पर आवश्यकता अनुसार लिखा या [illegible] जा सकता है। अध्यापक के लिए यह एक महत्वपूर्ण सहायक सामग्री है, जिसकी सहायता से वह मौखिक वर्णन के साथ-साथ विषय-वस्तु से सम्बन्धित [illegible] को लिखकर छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत कर सकता है। इसका उपयोग सभी विषयों के अध्ययन के समय किया जा सकता है।

श्यामपट्ट के प्रकार (Kinds of Black Board)

1. **दीवारी श्यामपट्ट** (*Wall Black-Board*) - यह श्यामपट्ट कक्षा-कक्ष की दीवार पर बना होता है। इसका निर्माण प्रायः स्लेटी पत्थर या सिमेंट [illegible] *किया जाता है। तैयार बोर्ड पर काला पेन्ट कर दिया जाता है। इसका निर्माण करते समय निम्नलिखित सावधानियाँ रखनी चाहिएं -*
   (i) *श्यामपट्ट बनाते समय कक्षा की स्थिति को ध्यान में रखना चाहिए। श्यामपट्ट की ऊँचाई इतनी होनी चाहिए कि वह सभी विद्यार्थियों आसानी से [illegible]* दिखाई दे सके।
   (ii) इसके निर्माण में उच्च कोटि का सामान लगाना चाहिए ताकि यह जल्दी खराब न हो।
   (iii) इस पर प्रतिवर्ष काला पेन्ट करवाना चाहिए।
2. **लकड़ी का श्यामपट्ट** (Wooden Black-Board) - यह लकड़ी का बना होता है। इस पर काला पेन्ट कर दिया जाता है और [illegible] लगा दिया जाता है। इसे आवश्यकता अनुसार ऊँचा या नीचा भी किया जा सकता है। इस प्रकार के बोर्डों का [illegible] उपयुक्त नहीं है।

3. श्याम-पट्टिकाएं (Roll-up Board) - ये कपड़े के बने हुए बोर्ड होते हैं, जिन्हें लपेटा जा सकता है व दीवार पर लटकाया जा सकता है। महाविद्यालयों में प्रशिक्षण ले रहे विद्यार्थियों के लिए अध्यापन-अभ्यास के लिए श्याम पट्टिकाएं प्रयोग में लाई जाती हैं।

4. चुम्बकीय बोर्ड (Magnetic Board) - चुम्बकीय बोर्ड का निर्माण इस्पात से होता है, जिसके साथ चुम्बक लगाए जाते हैं। यह बोर्ड प्राथ कक्षाओं में रोचकता लाने के लिए काफी उपयोगी है। पाठ को दोहराते समय चुम्बकीय बोर्ड पर पाठ से सम्बन्धित सामग्री को चिपका दि

श्यामपट्ट के प्रयोग से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण बातें

श्यामपट्ट का प्रयोग करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. श्यामपट्ट की स्थिति (Location of Black-Board) - श्यामपट्ट की स्थिति ऐसी होनी चाहिए, जिसे सभी विद्यार्थी आसानी से देख सकें। श्या ज्यादा ऊँचाई पर होना चाहिए और न ही ज्यादा नीचाई पर होना चाहिए।

2. लेखन (Writing) - अध्यापक द्वारा श्यामपट्ट पर अक्षर बड़े व सीधी रेखा में लिखे जाने चाहिए, ताकि अध्यापक द्वारा लिखा गया हर शब्द छात्रों तरह से समझ में आ सके।

3. अध्यापक की स्थिति (Position of Teacher) - अध्यापक को श्यामपट्ट के सामने इस प्रकार खड़ा होना चाहिए ताकि विद्यार्थियों को लिखा नजर आ सके। अध्यापक को श्यामपट्ट पर लिखते समय साथ-साथ बोलना चाहिए, ताकि छात्रों की दृश्य-श्रव्य इन्द्रियां सक्रिय रह सकें। अ छात्रों की तरफ पीठ करके नहीं लिखना चाहिए। अध्यापक को श्यामपट्ट के बिल्कुल नीचे नहीं लिखना चाहिए।

4. रंग (Colour) - श्यामपट्ट का रंग गहरा काला होना चाहिए, ताकि लिखा हुआ स्पष्ट दिखाई दे सके।

5. विभिन्न प्रकार के चॉकों का प्रयोग (Use of Different types of chalks) - श्यामपट्ट पर लिखते समय विभिन्न प्रकार के चॉकों का प्र चाहिए। श्यामपट्ट पर रंगीन चॉक की अपेक्षा सफेद चॉक से लिखना चाहिए ताकि अक्षर स्पष्ट दिखाई दे सकें, लेकिन दो वस्तुओं या दो शब्दों को स्पष्ट करने के लिए रंगदार चॉक का प्रयोग करना चाहिए।

6. झाड़न का प्रयोग (Use of Duster) - श्यामपट्ट को झाड़न से ही साफ करना चाहिए। झाड़न का प्रयोग ऊपर से नीचे की तरफ करना चाहिए त पाउडर नीचे गिर सके और कक्षा में न उड़े।

7. उचित प्रकाश (Proper Light) - श्यामपट्ट के ऊपर उचित प्रकाश की व्यवस्था होनी चाहिए ताकि श्यामपट्ट पर लिखा हुआ छात्रों को स्पष्ट सके।

8. सहायक सामग्री (Aids) - श्यामपट्ट पर लिखने की आवश्यक सामग्री जैसे - चॉक, डस्टर, स्टेंसिल, संकेतन आदि पहले से ही तैयार रखने

फलैनल बोर्ड (Flannel Board)

इस सहायक सामग्री को फैल्ट बोर्ड या फलैनल पट्ट भी कहा जाता है। यह कक्षा शिक्षण प्रयुक्त, लिखी हुई तथा चित्रात्मक सामग्री के तत्काल प्रदर्शन में लाए जाने वाला सबसे अच्छा साधन है। इसकी विशेषता यह है कि इस पर चित्रों या शब्दों को खींचने की आवश्यकता नहीं पड़ता। कार्य समाप्त बाद इन्हें यहाँ से हटाया जा सकता है।

फलैनल बोर्ड का निर्माण (Construction of Flannel Board)

यह एक लकड़ी या प्लाईवुड का बोर्ड या पट्टा होता है, जिसे उचित आकार में काटा जाता है। फलैनल बोर्ड प्राय 6 x 4'' (फीट) के होते हैं। परन्तु आ अनुसार छोटे-बड़े आकार में फलैनल बोर्डों का निर्माण किया जा सकता है। इस बोर्ड पर फलैनल कस कर चिपका दिया जाता है। यदि फलैनल कस कर नहीं चिपकाया जाता है तो चित्र इस पर नहीं ठहरेंगे। इसके बाद फलैनल बोर्ड पर प्रदर्शित किए जाने वाले चित्रों तथा मानचित्रों को सैंड पेपर पर चिपकाया जाता है। इससे ये टुकड़े फलैनल बोर्ड पर चिपके रहते हैं और प्रयोग करने के बाद हटाए जा सकते हैं।

फलैनल बोर्ड का महत्त्व (Importance of Flannel Board)

1. फलैनल बोर्ड के प्रयोग से कक्षा-कक्ष में विविधता आ जाती है।
2. प्राथमिक कक्षाओं के छात्र फलैनल बोर्ड की सहायता से मनोरंजक कहानियों को अच्छी तरह से समझ सकते हैं।
3. इस सहायक सामग्री का प्रयोग छोटी कक्षाओं में भाषा, गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल इत्यादि के शिक्षण के लिए सुगमता से किया जा स
4. फलैनल बोर्ड पर प्रस्तुत की जाने वाली सामग्री पहले से ही तैयार कर ली जाती है। अतः यह सुन्दर व आकर्षक होती है।
5. इस पर चित्र एवं प्रतिचित्र आसानी से प्रस्तुत किए जाते हैं।

फलैनल बोर्ड के प्रयोग में सावधानियाँ (Precautions to be taken while using Flannel Board)

1. इस पर दिखाए जाने वाले चित्रों को क्रमबद्ध ढंग से रखना चाहिए।
2. दिखाए जाने वाले चित्र का आकार उपयुक्त होना चाहिए।

3. [illegible] एवं चित्र पाठ्य-वस्तु से सम्बन्धित होने चाहिए।
4. दिखाई जाने वाली सामग्री को बोर्ड पर दबाकर चिपकाया जाना चाहिए ताकि प्रदर्शन के समय वह खुरदरे तल से अच्छी तरह से चिपक सके।
5. सामग्री को चढ़ाने से पहले बोर्ड पर चिपका कर देख लेना चाहिए।
6. [illegible] का रंग गहरा (Dark) होना चाहिए ताकि वह जल्दी गंदा न हो।

चित्र (Pictures)

[illegible] सहायक सामग्री के रूप में चित्रों का प्रयोग काफी प्रचलित है। चित्रों का प्रयोग सभी प्रकार के विषयों की शिक्षा के लिए भलीभांति प्रयोग किया जा सकता है। छात्रों को स्पष्ट एवं रोचक ज्ञान देने के लिए चित्रों का अपना एक विशिष्ट स्थान है। जिन वस्तुओं को हम प्रत्यक्ष रूप में नहीं देख सकते, उनके चित्रों की सहायता से अच्छी तरह से समझा जा सकता है। एक बार देखना सौ बार सुनने से अधिक लाभकारी होता है। अध्यापक किसी क्षेत्र से सम्बन्धित कितना ही मौखिक वर्णन करता रहे, लेकिन प्रभावशाली परिणाम नहीं मिलते। यदि उस क्षेत्र से सम्बन्धित चित्र दिखाया जाए तो छात्र उसे अपेक्षाकृत अच्छे ढंग से सीख सकते हैं। ऐतिहासिक भवनों, स्थलों आदि के बारे में जानकारी चित्रों के माध्यम से अच्छी तरह से दी जा सकती है। विज्ञान के क्षेत्र में पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, कीटों का ज्ञान तथा मानव शरीर की रचना एवं कार्यप्रणाली का ज्ञान चित्रों के माध्यम से अच्छी तरह से दिया जा सकता है। चित्र हर प्रकार के अधिगम में [illegible] योगदान देते हैं। प्राथमिक कक्षाओं में तो चित्रों का महत्व बहुत ज्यादा है।

चित्र बनाने की तैयारी (Preparation of Pictures)

चित्र बनाने के लिए जन्मजात गुण तथा अभ्यास दोनों ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 'करत-करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान' की कहावत चित्र बनाने [illegible] होती है। चित्र बनाने के लिए कल्पना शक्ति का होना जरूरी है। चित्र विभिन्न तरीकों से तैयार किए जा सकते हैं-

1. **फ्रीहैंड ड्राइंग तथा पेंटिंग** (Freehand Drawing and Painting) - इस प्रकार के चित्र केवल कलाकार ही बना सकते हैं। आम विद्यार्थी में यह प्रतिभा नहीं होती कि वह ड्राइंग व पेंटिंग कर सके। यह प्रतिभा कुछ गिने-चुने व्यक्तियों में ही होती है।

2. **ट्रेसिंग** (Tracing) - जो व्यक्ति कम प्रतिभाशाली होते हैं, वे ट्रेसिंग का सहारा लेते हैं। प्रायः अध्यापक व छात्र इस विधि को अपनाते हैं। अध्यापकों द्वारा स्कूल स्तर पर इसी विधि का प्रयोग किया जाता है।

3. **चित्र काटकर अलग पेपर पर चिपकाना** (Pasting pictures on drawing sheets after cutting them from News papers and journals) - यह विधि जे०बी०टी० तथा बी०एड० के छात्रों द्वारा प्रयोग में लाई जाती है। किसी कैलेन्डर, समाचार पत्र या पत्रिका में से प्रकरण से सम्बन्धित चित्रों को काटकर अलग ड्राईंग पेपर पर चिपका कर भी चित्र तैयार कर लिए जाते हैं।

4. **एपीडायस्कोप की सहायता से** (With the help of epidiascope) - एपीडायस्कोप को चित्र विस्तारक यन्त्र भी कहते हैं। इस विधि का प्रयोग कक्षा-कक्ष में अध्यापक द्वारा किया जाता है। यह कक्षा में प्रदर्शन करने की सबसे उत्तम विधि है। इस यन्त्र में छोटे-छोटे चित्रों, मानचित्रों, पोस्टरों तथा पुस्तक में छपे चित्रों को कमरे में अंधेरा करके स्क्रीन पर बिना स्लाईड बनाए हुए ही बड़ा करके दिखाया जा सकता है।

चित्रों का महत्त्व (Importance of Pictures)

1. छोटे बच्चों को रंग, पशु, पक्षी आदि के नाम चित्रों की सहायता से अच्छी तरह से सिखाए जा सकते हैं।
2. यदि पाठ्य पुस्तक में चित्र दिया गया हो तो छात्र उस पाठ को अच्छी तरह से सीखते हैं।
3. चित्रों की सहायता से छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास होता है।
4. कोई भी कहानी, कविता या कोई भी पाठ चित्र की सहायता से सुगमता से बच्चों को याद होता है और उसे लम्बे समय तक याद रखते हैं।

चित्रों के प्रयोग में सावधानियाँ (Precautions to be taken while using pictures)

1. चित्र पढ़ाए जाने वाली पाठ्य-वस्तु के अनुसार होना चाहिए।
2. चित्र सुन्दर एवं आकर्षक होना चाहिए। छोटे बच्चे सुन्दर चित्र के प्रति ज्यादा आकर्षित होते हैं और उसके द्वारा सीखने का प्रयास करते हैं।
3. चित्र में आवश्यक बातों को ही दिखाना चाहिए। अनावश्यक बातें चित्र की प्रभावशीलता को खत्म कर देती हैं।
4. कक्षा में एक बार में केवल एक ही चित्र दिखाना चाहिए।
5. चित्र उद्देश्यपूर्ण, तर्क संगत, सरल, रोचक तथा विद्यार्थियों की आयु और योग्यता के अनुरूप होना चाहिए।
6. चित्र को देखने व समझने के लिए छात्रों को उपयुक्त समय दिया जाना चाहिए।

8. विद्यार्थियों को चित्र के सम्बन्ध में अपने विचारों को प्रकट करने का मौका प्रदान करना चाहिए।
9. चित्र को इस प्रकार से प्रदर्शित किया जाना चाहिए कि वह सभी विद्यार्थियों को दिखाई दे सके।
10. अध्यापक को चित्र प्रदर्शित करने के साथ-साथ उसके बारे में मौखिक रूप से भी बताना चाहिए।
11. चित्रों का प्रयोग आवश्यकता अनुसार ही किया जाना चाहिए। आवश्यकता से अधिक चित्रों का प्रयोग पाठ को पाठ की बजाय तमाशा ब[illegible]

चार्ट (Chart)

चित्र या ग्राफों के रूप में जो कुछ अलग-अलग प्रदर्शित किया जा सकता है, उन सभी को सुविधापूर्ण या इकट्ठे रूप में प्रदर्शित करने का कार्य अच्छी तरह से किया जा सकता है। डेल के अनुसार, "चार्ट एक दृश्य चिन्ह है जो कि विषय वस्तु के सार की तुलना या किसी दूसरी वस्तु की व्या[illegible] में सहायता करता है।" (A Chart may be defined as a visual symbol summerising or contrasting or performing other helpful ser[illegible] explaining the subject matter)

चार्ट तैयार करने की सामग्री (Material to be used for preparation charts)

चार्ट तैयार करने के लिए निम्नलिखित सामग्री की ज़रूरत पड़ती है -

1. मोटी और मज़बूत ड्राइंग शीट।
2. विभिन्न प्रकार के रंग तथा ब्रुश।
3. विभिन्न रंगों की पैंसिलें, रबड़ तथा स्कैच पैन (Pencils of different types)
4. पैमाना (Ruler)
5. स्टैंसिल (Stencil) आदि।

Deen Dayal Rustagi College of Educa[illegible]
LIBRARY
Acc. ....
Date..........

चार्ट बनाते समय ऐसी स्याही का प्रयोग करना चाहिए जो चार्ट को रोल करते समय न फैले। यदि बच्चे छोटी उम्र के हों तो चार्ट रंगीन तथा मज़[illegible] चाहिए। चार्ट बनाते समय कागज़ चार्ट के आकार के अनुसार ही काटना चाहिए, अन्यथा कागज़ का एक बड़ा टुकड़ा खाली रह जाएगा।

चार्टों के प्रकार (Kinds of Charts)

1. तालिका चार्ट (Table Chart) - इन चार्टों में तथ्य एवं सूचनाओं को तालिका के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। तालिका चार्ट में कई प्रकार के [illegible] आकार, विचारों, घटनाओं तथा विवरणों को क्रमानुसार व्यवस्थित किया जाता है। विद्यालय समय सारणी इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। तुलनात्मक [illegible] में तालिका चार्टों का प्रयोग महत्त्वपूर्ण होता है।
2. वृक्षाकृति चार्ट (Tree Chart) - इन चार्टों में बनी आकृति वृक्ष जैसी होती है। वृक्ष का मूल एवं मुख्य तना जहाँ किसी संगठन या विकास के उद्[illegible] प्रकट करता है, वहाँ शाखाएँ, तने तथा पत्तियों द्वारा उसके बहुआयामी विकास को प्रदर्शित किया जाता है। वृक्षाकृति चार्ट किसी वस्तु की वृद्धि का [illegible] दिखाने का प्रभावशाली साधन है।
3. समय चार्ट (Time Chart) - घटनाओं के कार्यकाल को बताने के लिए इन चार्टों को काम में लाया जाता है। ऐतिहासिक घटनाओं, तिथियों, काल-क्र[illegible] इनको एवं युद्धों का वर्णन करने के लिए यह चार्ट बहुत उपयोगी है। इतिहास के अतिरिक्त नागरिक शास्त्र तथा अर्थशास्त्र विषयों में भी इसका [illegible] किया जा सकता है। अर्थशास्त्र में विभिन्न योजनाओं का विकास, राष्ट्रीय आय में विकास तथा जनसंख्या वृद्धि आदि दर्शाने के लिए समय चार्ट का [illegible] किया जाता है।
4. प्रवाह चार्ट (Flow chart) - इस प्रकार के चार्टों द्वारा किसी भी आन्दोलन, प्रक्रिया, विचारधारा, संगठन आदि के क्रमिक विकास, प्रवाह तथा प्रब[illegible] भलीभांति दिखाया जा सकता है। इन चार्टों में रेखाओं, तीरों, आयतों आदि का प्रयोग किया जाता है।
5. ग्राफ चार्ट (Graph chart) - इन्हें [illegible] चार्ट भी कहा जाता है। इन चित्रों में पढ़ाई जाने वाली विषय-वस्तु को आलेख, ग्राफ, रेखाकृतियों [illegible] तथा परम्परागत [illegible] के माध्यम से प्रदर्शित करने का प्रयास किया जाता है। कक्षा शिक्षण में सबसे अधिक इस प्रकार के चार्टों का प्रयोग होता है। [illegible] आँकड़ों को दर्शाने में इन चार्टों का प्रयोग सबसे उपयुक्त है।
6. वृत्ताकार चार्ट (Circle chart) - इन चार्टों में वृत्त को आवश्यकतानुसार खण्डों में विभाजित किया जाता है। इसमें प्रत्येक वृत्त किसी प्रतिशत को [illegible] करता है।
7. समस्या चार्ट (Issue chart) - इस प्रकार के चार्टों का प्रयोग महत्त्वपूर्ण विषयों अथवा समस्याओं पर [illegible] जानकारी प्रदान करने के लिए किया जाता है।

1. चार्टों का प्रयोग विषय वस्तु के अनुसार करना चाहिए।
2. चार्ट साफ और सुन्दर होना चाहिए।
3. चार्ट मोटे और मजबूत कागज पर बनाना चाहिए।
4. चार्ट में सीमित सामग्री का प्रयोग किया जाना चाहिए।
5. चार्ट का प्रयोग करते समय उपयुक्त समय और विद्यार्थियों की आवश्यकता को ध्यान में रखना चाहिए।
6. चार्ट शैक्षिक उद्देश्यों के अनुरूप होना चाहिए।
7. चार्ट का प्रयोग करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह कक्षा के सभी विद्यार्थियों को दिखाई दे।
8. चार्ट पर अक्षरों को बड़े आकार में लिखना चाहिए।
9. चार्ट पर लिखे गए अक्षर स्पष्ट होने चाहिए।

बुलेटिन बोर्ड/सूचनापट्ट (Bulletin Board/Notice Board)

सूचनापट्ट जैसा की नाम से ज्ञात हो रहा है, कक्षा के बाहर बरामदों में लगाए गए उन बोर्डों की ओर संकेत करता है, जिन पर छात्रों को सूचना विभिन्न प्रकार की लिखित, चित्रात्मक और मुद्रित सामग्री का भली-भाँति प्रदर्शित करने का प्रयास किया जाता है। सामाजिक अध्ययन शिक्षण में एक सहायक साधन के रूप में इस प्रकार का प्रदर्शन काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सूचनापट्ट का निर्माण

इसका निर्माण छात्रों की सहायता से विद्यालय में ही कराया जा सकता है। इसके लिए प्लाईवुड के उपयुक्त आकार के फ्रेम बनाकर उनमें लकड़ी की शीट पर सॉफ्ट वुड की शीट लगा दी जाती है ताकि उसमें पिन अच्छी तरह गाढ़ी जा सके। उचित प्रदर्शन हेतु इस पर शीशे या जाली युक्त फ्रेम लगा दिया जाता है।

प्रयोग की विधि

1. उपयुक्त शीर्षक का होना - प्रत्येक सूचना के ऊपर उपयुक्त शीर्षक होना चाहिए।
2. उपयुक्त आकार की सामग्री - जो सामग्री लगाई जाए उसका आकार ठीक होना चाहिए, ताकि विद्यार्थी उसे आराम से देख सकें।
3. सूचनाओं की भीड़ नहीं - सूचनापट्ट पर सूचनाओं की अधिकता नहीं होनी चाहिए। इसपर केवल उपयुक्त सामग्री को ही प्रदर्शित करना चाहिए।
4. सूचनापट्ट की व्यवस्था अध्यापक की पूर्ण देख-रेख में ही होनी चाहिए।
5. बच्चों के सृजनात्मक उत्पादन तथा रचनात्मक कार्यों, जैसे - सामाजिक अध्ययन से संबंधित विषयों पर लेख, विभिन्न प्रकार की शिक्षणात्मक सामग्री तथा सामाजिक सर्वेक्षण और गतिविधियों का ब्यौरा आदि।

बुलेटिन बोर्ड के लाभ

1. छात्रों की रुचि को परिष्कृत करने में सहायक।
2. उनकी प्रतिभा को आगे लाने के अवसर प्रदान करने में सहायक।
3. विद्यार्थियों के ज्ञान एवं बौद्धिक स्तर को ऊँचा उठाने में सहायक।
4. स्थाई तथा अधिक समय तक टिकने वाला ज्ञान प्रदान करना।
5. रचनात्मक कार्यों को प्रदर्शित करने का स्थान।
6. सामूहिक कार्य करने के अवसर प्रदान करना।
7. क्रमानुसार प्रदर्शन करना।
8. सुन्दर व आकर्षक सामग्री।
9. उपयुक्त वातावरण उत्पन्न करना।

मानचित्र का प्रयोग भू-भागों के प्रदर्शन हेतु किया जाता है। सामाजिक अध्ययन शिक्षण की बहुत सी ऐसी बातें जिनका संबंध पृथ्वी के विभिन्न हैं, ये बातें मानचित्रों की सहायता से आसानी से पढ़ाई जा सकती हैं। एक अध्यापक को अपनी विषय-वस्तु तथा पढ़ाने की परिस्थितियों को उचित मानचित्र का चुनाव करने का प्रयत्न करना चाहिए। विद्यार्थियों को भी इस बारे में पर्याप्त प्रेरणा और सहायता प्रदान करनी चाहिए।

मानचित्रों का उपयोग

1. जलवायु तथा वनस्पति की जानकारी के लिए।
2. उपयुक्त जानकारी।
3. पाठ को रुचिकर बनाने में सहायता प्रदान करना।
4. कठिन ज्ञान सरल बन जाता है।

चयन और प्रयोग संबंधित आवश्यक बातें

1. स्थिति
2. दीवार पर टाँगने संबंधी सावधानी
3. निर्माण
4. उपयुक्त रेखांकन ।
5. उपयुक्त रख-रखाव।
6. विषय-वस्तु की यथार्थता।
7. अधिक रंग न होना।
8. [illegible]
9. अत्यधिक विस्तृत न होना।
10. स्थानों को सही ढंग से प्रस्तुत किया जाना।

मानचित्र के प्रकार

1. स्केच मानचित्र - इसमें मानचित्रों की केवल रेखाएँ होती हैं।
2. फ्लैट मानचित्र - जिन मानचित्रों की सहायता से विश्व के विभिन्न देशों की प्राकृतिक दशा या राजनैतिक व्यवस्था दर्शाई जाती है
3. रिलीफ मैप - ये मानचित्र पृथ्वी के धरातल को प्रदर्शित करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

मॉडल/प्रतिमान (Model)

कई बार किसी कारण वश वास्तविक पदार्थों और उनसे संबंधित प्रक्रियाओं को प्रत्यक्ष रूप में दिखा पाना संभव नहीं हो पाता। इसके लिए ऐसी की आवश्यकता होती है जो नकल होते हुए भी वास्तविक पदार्थ को प्रस्तुत करता है। प्रतिमान इस दिशा में काफी प्रभावशाली भूमिका निभा परिस्थितियों में तो ये मॉडल अपने वास्तविक पदार्थों से भी अधिक प्रभावशाली सिद्ध होते हैं। ऐसी कुछ परिस्थितियाँ सामाजिक हो सकती हैं।

मॉडल की शैक्षिक उपयोगिता

1. **कार्यकारी मॉडल** - कार्यकारी मॉडल तथा विभागीय प्रकार के मॉडलों से शिक्षण कार्य में हमें वस्तुओं तथा उनकी प्रक्रियाओं के अ बहुत सहायता मिलती है।
2. **जहाँ वास्तविक पदार्थ बहुत छोटा या बड़ा हो** - ऐसी परिस्थितियों में प्रतिमान का प्रयोग काफी प्रभावशाली सिद्ध हुआ है।
3. **सृजनात्मक शक्ति का विकास** - मॉडल छात्रों की सृजनात्मक शक्ति का विकास करते हैं।
4. **अधिगम प्रक्रिया को रोचक बनाना** - प्रतिमान अधिगम प्रक्रिया को सजीव व रोचक बनाते हैं।
5. **जहाँ दूसरे विकल्प संभव नहीं** - विभिन्न विषयों में विशेषकर सामाजिक अध्ययन विषय में ऐसे [illegible] पदार्थों के बारे में ज्ञान, जिन [illegible] द्विआयामी सामग्री द्वारा पढ़ाया जा सकता है, उनमें मॉडलों का उपयोग उपयुक्त माना जाता है।

स्लाईड (Slides)

स्लाइड [illegible] सामग्री के अन्तर्गत आती है। इन्हें एपीडायस्कोप, जादुई लालटेन तथा प्रोजेक्टरों आदि दृश्य उपकरणों की सहायता से पर्दे पर प्रक्षेपित करके शिक्षण में प्रयुक्त किया जा सकता है।

स्लाइडों के प्राप्ति के स्रोत (Sources of getting slides)

1. स्लाइडें व्यावसायिक फर्मों (Commercial firms) से प्राप्त की जा सकती हैं।
2. स्लाइडें अध्यापक शिक्षण संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषदों आदि से प्राप्त की जा सकती हैं।
3. स्लाइडें अध्यापक की देखरेख में छात्रों द्वारा निर्मित की जा सकती हैं।

स्लाइडों का महत्त्व (Importance of slides)

स्लाइडों द्वारा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया सहज, आकर्षक और महत्त्वपूर्ण बन जाती है। स्लाईड के प्रयोग के महत्त्व निम्नलिखित हैं-

1. स्लाइडें पाठ की प्रस्तावना, उसके प्रस्तुतीकरण तथा विकास में अत्यन्त सहायक सिद्ध होती हैं।
2. [illegible] सामग्री के पुनः प्रस्तुतीकरण, अभ्यास तथा निरीक्षण में स्लाईडें सहायता प्रदान करती हैं।
3. स्लाइडों द्वारा विषय वस्तु सरल, आकर्षक तथा स्पष्ट बन जाती है। कक्षा में वातावरण क्रियाशील बन जाता है।
4. सम्पूर्ण कक्षा के छात्रों को एक साथ अधिक से अधिक ज्ञानार्जन करने में स्लाईडें सहायक सिद्ध होती हैं।
5. स्लाइडें, छात्रों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय साझेदार बनाने में सहायक होती हैं।

वाचन कौशल विकास

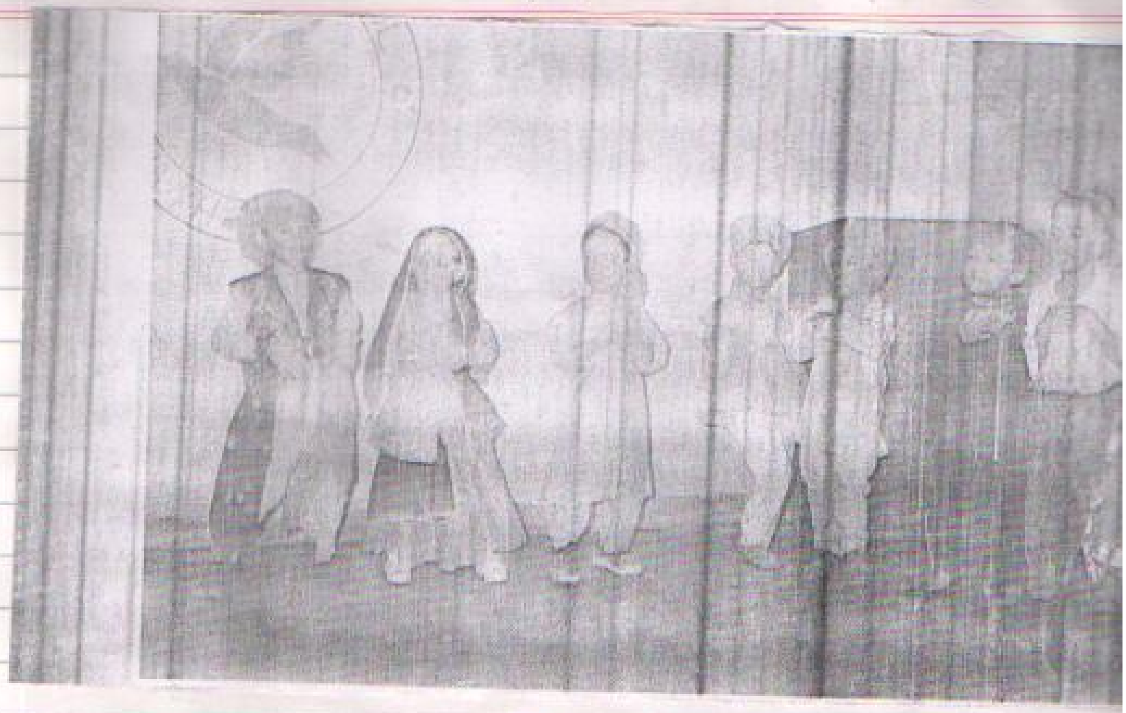

अभिव्यक्ति कौशल विकास

वाचन कौशल विकास

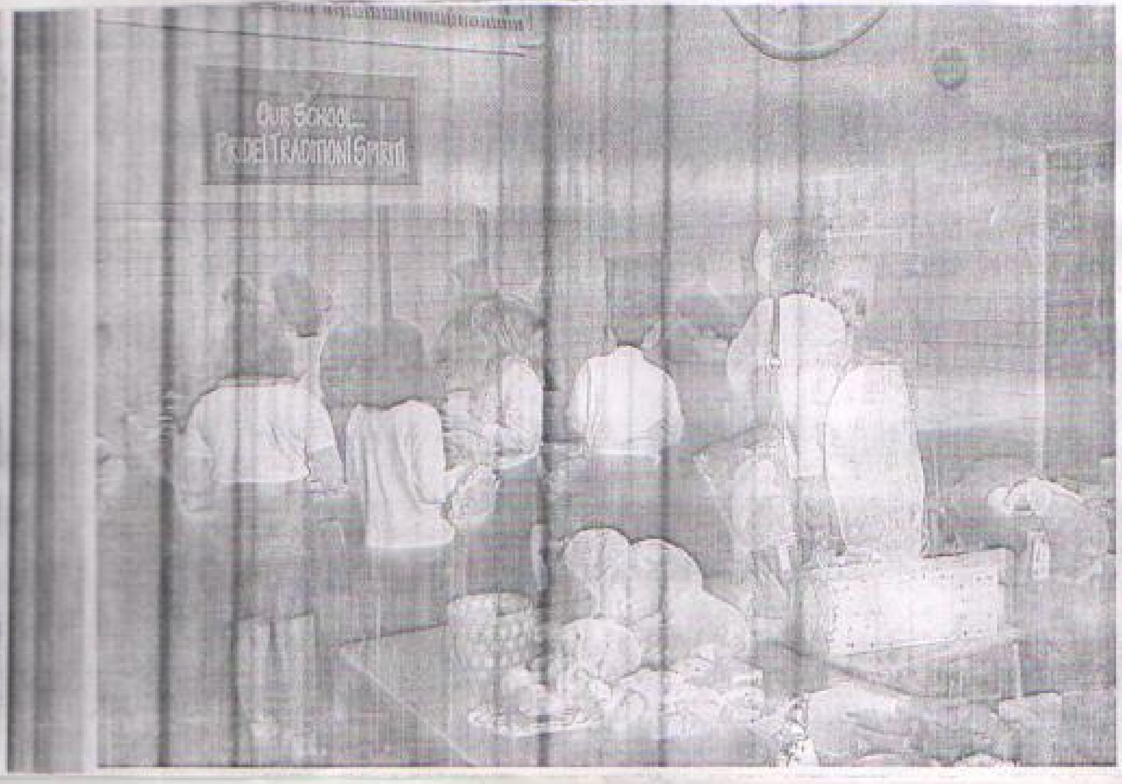

श्रवण कौशल विकास

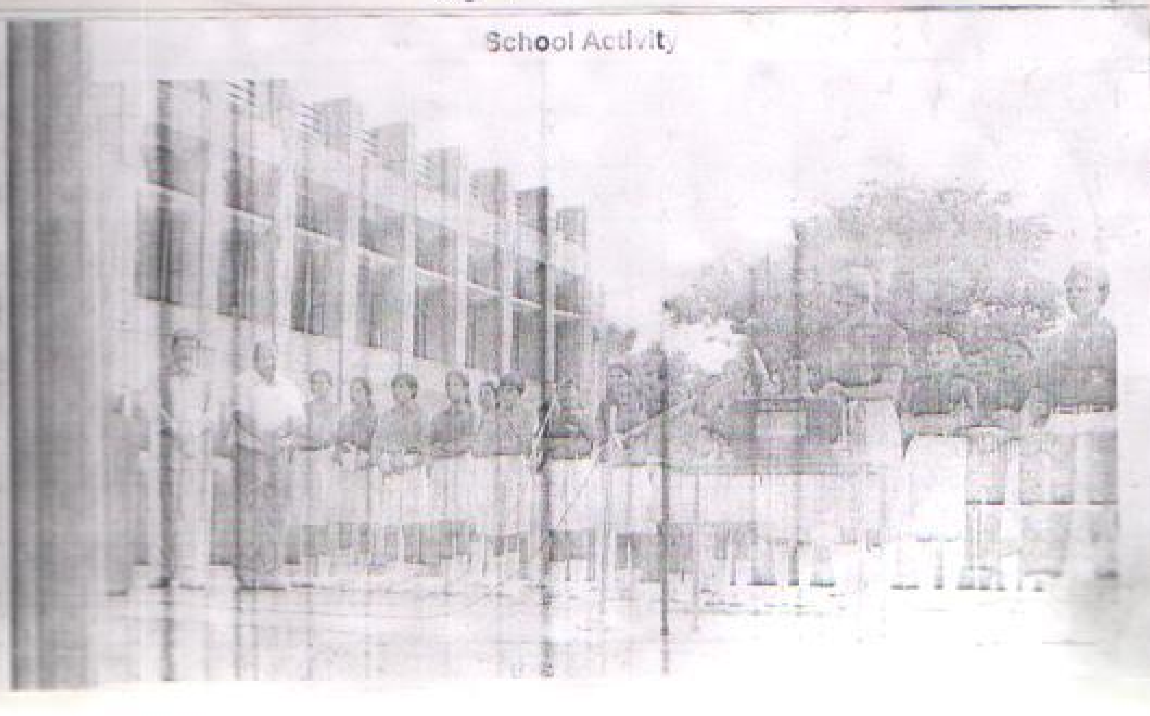

अभिव्यक्ति कौशल विकास

पठन कौशल विकास

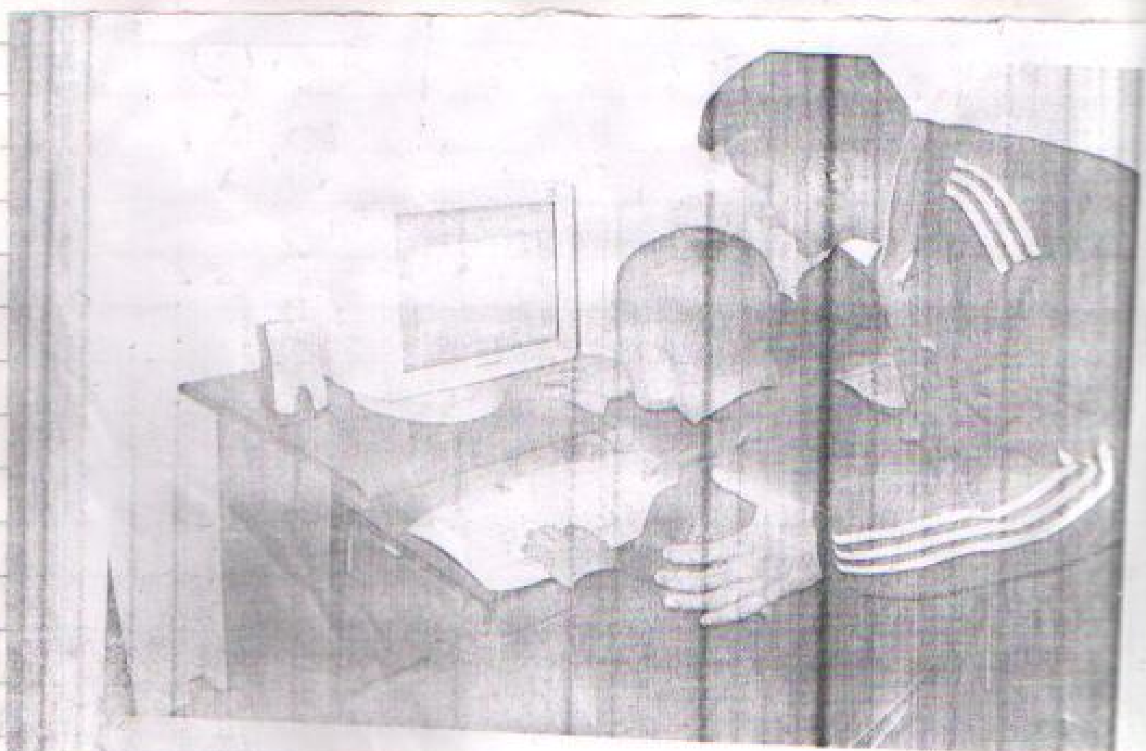

श्रवण कौशल विकास

लेखन कौशल विकास

उपलब्धि परीक्षण
संस्कृत

नोट : (i) अपनी उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ के ऊपर दिए गए खाने में प्रश्न-पत्र कोड नम्बर अवश्य लिखें।

(ii) उत्तर-पुस्तिका के बीच में खाली पन्ना/पन्ने न छोड़ें।

(iii) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न संख्या अवश्य लिखें। प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का एक क्रम एवं एक साथ उत्तर दीजिए।

1. (क) समस्त पदों का विग्रह करके समास का नाम बताइए : 1 × 3 = 3
   - (i) घनश्यामः,
   - (ii) यथाशक्ति,
   - (iii) शुभ्रजलम्।

   (ख) द्वन्द्व समास की उदाहरण सहित परिभाषा लिखिए। 2

2. निम्नलिखित के यथानिर्दिष्ट रूप लिखिए : 1 × 5 = 5
   - (i) नश् + क्त,
   - (ii) कृ + क्त्वा,
   - (iii) सेव + शतृ,
   - (iv) बल + तव्यत्,
   - (v) धर्म + ठक्।

3. निम्नलिखित पदों में निर्धारित विभक्तियाँ लगाकर उनका संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 1 × 5 = 5
   - (i) धिक्,
   - (ii) बिना,
   - (iii) स्पृह्,
   - (iv) ऋते,
   - (v) साधु।

4. निम्नलिखित अव्ययों के अर्थ लिखकर उनका संस्कृत-वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 1 × 5 = 5
   - (i) उच्चैः,
   - (ii) नूनम्,

(iii) टत:,

(iv) यदि:,

(v) अथ।

5. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए : 1×5=5

(i) गुरव: छात्रेभ्य: शिक्षां ददाति।

(ii) राम: ग्रामाद् अजां नयति।

(iii) सर्वा: बालका: गच्छन्ति।

(iv) अयं स्त्री मूर्ख: अस्ति।

(v) राज्ञ: चत्वारि पुत्रा: आसन्।

6. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए : 2×5=10

(क) नगर के पास एक सुन्दर बाग है।

(ख) अति का सर्वत्र त्याग करो।

(ग) शिष्य गुरु से पाठ पढ़ता है।

(घ) वह प्रातः काल उठकर स्कूल जाएगा।

(ङ) वह पैर से लंगड़ा है।

अथवा

एकदा कस्मिंश्चिद्वने अटन् एक: सिंह: श्रान्तो निद्रां गत:। अस्मिन्नवसरे कश्चित् क्षुद्रो मूषकस्तस्योपरि कूर्दित्वा निद्राभङ्गं चकार। तत: सिंह: कोपेन मूषकं व्यापादितुमैच्छत्। भयाकुलो मूषक: प्राणरक्षार्थं तं बहुधा याचितवान्। सिंहोऽपि दयया [illegible] मुक्त:।

उपरिलिखित अनुच्छेद को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए : 2×5=10

(i) सिंह किम् कुर्वन् आसीत् ?

(ii) मूषक: सिंहस्य उपरि कूर्दित्वा किम् चकार ?

(iii) सिंह कोपेन किं कर्तुं ऐच्छत् ?

(iv) भयाकुलो मूषक: सिंहं किम् याचितवान् ?

(v) सिंहेन किम् कृतं ?

7. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर कम से कम पन्द्रह पंक्तियों में संस्कृत-निबन्ध लिखिए : 15

(i) मम प्रिय: नेता,

(ii) मम विद्यालय:,

(iii) वर्षर्तुवर्णनम्,

(iv) सदाचार:,

(v) परोपकार:।

8. निम्नलिखित गद्यांशों का हिन्दी-अनुवाद कीजिए : 5+5=10

(क) अथ तत् श्रुत्वा भयप्रसन्नमना ताम्रचूड: प्रत्युवाच-"भो भगवन्! मा एवं वद! न त्वत्समोऽन्यो मम सुहृत् कश्चिदस्ति, तत् श्रूयतां गोष्ठीशैथिल्यकारणम्। एष दुरात्मा मूषक: प्रोन्नतस्थाने धृतमपि भिक्षापात्रम् उत्प्लुत्य आरोहति भिक्षाशेषञ्च तत्र भक्षयति।"

(ख) एकदा[illegible] प्रयाय वारु शरीरमुदकामत्। सा संवत्सरं प्रोष्य [illegible] पप्रच्छ-'कथं भवद्भिर्मया विना जीवितम्'? प्रत्यूचुः [illegible] "यथा मूका अवदन्तोऽपि [illegible] श्वसन्तः [illegible] पश्यन्तः श्रोत्रेण शृण्वन्तो मनसा ध्यायन्तो जीवन्ति एवं [illegible]जीवाम॥"

9. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: 8+8=16

(क) यदि ते सन्ति [illegible] कथमत्र विभीषिका ?
किमुक्तैरिभिरधुना तां पताकां हरामि वः॥

(ख) विभाति कायः करुणापराणां
परोपकारेण न चन्दनेन॥

10. निम्नलिखित उक्तियों में से किन्हीं दो का भावार्थ लिखिए: 4+4=8

(क) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

(ख) उपायं चिन्तयेत् [illegible] चिन्तयेत्।

(ग) व्यसनी वृद्धिनाप्नोति [illegible] संचयात्।

11. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए: 2×5=10

पुरा ब्रह्मारण्ये कर्पूरतिलको नाम हस्ती प्रत्यवसत्। [illegible] तं दृष्ट्वा [illegible] शृगाला-श्चिन्तयन्ति स्म-यद्येषु केनाप्युपायेन म्रियेत् तदस्माकं मासचतुष्टयस्य भोजनं भवेत्। तत एकेन वृद्धशृगालेन चिन्तितम्-मया बुद्धि प्रभावादस्य करिणो मरणमापयितव्यम्। अनन्तरं स वञ्चको हस्तिनः समीपं गत्वा तं प्रणमति स्म। हस्ती पप्रच्छ-"कः त्वम्? कुत आगतः?"

(क) पुरा ब्रह्मारण्ये कः प्रत्यवसत्?

(ख) कर्पूरतिलकस्य वपुरवलोक्य शृगालाः किं चिन्तयन्ति स्म?

(ग) वृद्ध शृगालेन किम् चिन्तितम्?

(घ) वञ्चकः शृगालः कं प्रणमति स्म?

(ङ) हस्ती किम् पप्रच्छ?

12. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए: 2×3=6

(क) पराक्रमः,

(ख) व्यापादितम्,

(ग) तूष्णींकृत्य।

उपलब्धि परीक्षण मूल्यांकन का

ही एक भाग है

उपलबिध परीक्षण
(ACHIEVEMENT TEST)

उपलब्धि परीक्षण का अर्थ व परिभाषा:-

ज्ञानोपार्जन या उपलब्धि परीक्षण विद्यालय में पढे हुए विषय सम्बन्धी ज्ञान की परीक्षा है। विद्यार्थी अपने अध्ययन में कुछ विशेष विषयों का एक निश्चित अवधि तक अध्ययन करता है और उसमें एक सीमा तक योग्यता प्राप्त करता है। उपलब्धि परीक्षण द्वारा अध्यापक यह जानकारी प्राप्त कर सकता है कि विद्यार्थी ने कक्षा में बैठकर किस विषय में कितनी उन्नति की है? ज्ञानोपार्जन परीक्षण की परिभाषा विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों ने भिन्न-भिन्न रूप में दी है-

लिंइक्विस्ट एवं मान के अनुसार:-

"एक सामान्य उपलब्धि परीक्षण वह है जो एक फलांग द्वारा उपलब्धि के किसी दिए हुए क्षेत्र में विद्यार्थी के सापेक्षिक का बोध कराए।"

A general achievement test is one designed to express in terms of a single score, a pupil relative achievement, in a given filed of achievement.

ईबेल के शब्दो में :-

"ज्ञानोपार्जन/उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्प है, जो विद्यार्थी के द्वारा ग्रहण किए गए ज्ञान, कुशलता या क्षमता का मापन करता है।"

An achievement test is one designed to measure a student's grasp of some knowledge or his proficiency in certain skills.

फ्रीमेन के अनुसार:-

"उपलब्धि परीक्षण वह है, जो एक विशेष विषय पर पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों, व्यक्ति के ज्ञान, समान एवं कौशल का माप करता है।"

A test of educational achievement is one designed to measure knowledge, under-standing or skill in a specified subject or a group of subject.

उपलब्धि परीक्षण निर्माण की विधि

(CONSTRUCTION PROCEDURE OF ACHIEVEMENT TEST)

उपलब्धि परीक्षण क्या होता है, इस जानकारी को प्राप्त करने के पश्चात् इस बात की जानकारी भी आवश्यक है कि उपलब्धि परीक्षण का निर्माण कैसे किया जाता है एवं एक उपलब्धि परीक्षण के निर्माण में कौन कौन सी क्रियायें निहित है। उपलब्धि परीक्षण निर्माण के निम्नलिखित सोपान है:-

1. **लक्ष्य निर्धारित करना** : परीक्षा के लक्ष्य सुनिश्चित होने चाहिए। विद्यार्थियों द्वारा वांछित व्यवहार के विशिष्ट परिवर्तनों के अनुरूप परीक्षा के लक्ष्य पहले से निर्धारित किए जाने चाहिए। इस उपलब्धि परीक्षण के लक्ष्य निम्नलिखित है:-

   i) विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान व वृद्धि करना।

   ii) विद्यार्थियों के मौलिक अधिकारों, मौलिक कर्तव्यों तथा राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांतो के बारे में जानकारी देना।

   iii) विद्यार्थियों में प्रजातांत्रिक मूल्यों तथा नागरिक गुणों का विकास करनां

   iv) विद्यार्थियों को उनके अधिकारों तथा कर्तव्यों के प्रति जागरूक करना।

2. **पूरे पाठ्यक्रम का ध्यान रखना** : परीक्षा में निर्धारित की जाने वाली सामग्री प्रत्यक्ष रूप से उस पाठ्यक्रम पर आधारित की जानी चाहिए जिसे अध्यापक द्वार पढ़ाया जा चुका है। विद्यार्थियों को दिए गए शिक्षण अनुभव के विभिन्न तत्वों को उचित रूप से ध्यान में रखकर परीक्षा पत्र का निर्माण करना चाहिए। इस उपलब्धि परीक्षण में इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है। इस परीक्षण में प्रश्न-पत्र का निर्माण इस प्रकार से किया गया है जो पूरे टोपिक को कवर कर सके। यह प्रश्न पत्र हमारे टोपिक "मौलिक अधिकार, मौलिक कर्तव्य तथा राज्य-नीति के निर्देशन सिद्धांत के आधार पर बनाया गया है।

3. **प्रश्नों के प्रकार का निर्णय** : प्रश्नों के प्रकार का निर्णय निर्माण का महत्वपूर्ण तत्व है। प्रश्न बताते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि प्रश्न छोटे

तथा वैषयिक (Objective Type) होने चाहिए तथा प्रश्न बच्चों की योग्यता को ध्यान में रखकर बनाये जाने चाहिए।

4. **समय का निर्णय :** विद्यार्थियों को प्रश्नों के उत्तर देने के लिए कितना समय दिया जाएगा इसका भी पहले से ही निर्णय कर लेना चाहिए।

5. **ब्लयू-प्रिंट तैयार करना :** परीक्षा योजना कार्य यह सबसे कठिन चरण है। ब्लयू-प्रिंट एक प्रकार का डिजाइन होता है, जिसमें विशिष्ट लक्ष्यों, उपकरणों तथा प्रश्नों के लिए अंक निर्धारित किए ते है।

6. **प्रश्नों को कठित एवं व्यवस्थित करना :** परीक्षण में दिए जाने वाले प्रश्नों को उचित रूप से गठित एवं व्यवस्थित करने की आवश्यकता होती है। इसमें निम्नलिखित बातों को ध्यान रखना चाहिए।

क. निबन्धात्मक एवं वस्तुपरक प्रश्न अलग-अलग भागों में रखे जाने चाहिए और उनके लिए अलग-अलग समय निर्धारित होना चाहिए।

ख. प्रत्येक भाग के लिए अलग-अलग निर्देश होने चाहिए।

ग. प्रश्न आसान से उतरोतर कठिन होने जाने चाहिए।

घ. वस्तुपरक-प्रश्नों में अधिक प्रश्न देना ठीक नहीं होगा क्योंकि इस प्रकार आदेश पढने में ही विद्यार्थियों को बहुत सा समय नष्ट हो जाता है। जहां तक हो सके 'बहु-चुनाव' सम्बन्धी प्रश्न ही देनें चाहिए क्योंकि वे अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय एवं वस्तुपरक होते हैं।

7. **प्रश्न लिखना और उनकी कठिनाई का अनुमान लगाना :** उपर्युक्त ढंग से योजना बनाने के पश्चात अध्यापक को सभी प्रश्न लिखने चाहिए। 20प्रतिशत अधिक प्रश्न लिखना अच्छा होगा ताकि परीक्षा पत्र को अंतिम रूप देते हुए फालतू प्रश्नों को हटाया जा सके। परीक्षा पत्र ना तो बहुत कठिन होना चाहिए और ना ही बहुत आसान। इसके लिए अध्यापक को उसकी कठिनाई पर भी ध्यान देना चाहिए। प्रत्येक प्रश्न की कठिनाई स्तर को जांचने के लिए अध्यापक

को उस परीक्षा का प्रयोग कुछ विद्यार्थियों पर करना चाहिए तथा प्रत्येक प्रश्न में उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत के आधार पर उस परीक्षा के परिणाम का विश्लेषण करना चाहिए। यदि उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या अधिक है तो प्रश्न आसान है। इस विश्लेषण के आधार पर प्रश्नों का कठिनाई स्तर निश्चित करना चाहिए।

8. अंकन तालिका तैयार करना : अंकन में वस्तुपरकता को पहले से ही निश्चित किया जाना चाहिए। केवल वस्तुपरक प्रश्नों के लिए ही नहीं बल्कि निबन्धात्मक प्रश्नों तथा लघु-उतरात्मक प्रश्नों के लिए भी अंकन-विधि पहले से निर्धारित होनी चाहिए।

इस उपलब्धि परीक्षण का ब्लयू-प्रिंट इस प्रकार है:-

<u>BLUE-PRINT</u>

Type of Question	Know-ledge	Compr-ehension	Appli-cation	Analysis	Total Marks
Multiple Chocie	5	--	--	--	5
True/False	4	--	--	--	4
Matching Type	--	5	--	--	5
Short Answer Type	2	3	3	3	11
Fill in the blanks	3	2	--	--	5
Total no. of questions	4	10	3	3	30

सामाजिक अध्ययन प्रश्न पत्र

उपलब्धि परीक्षण

कक्षा : दसवी
समय : 40 मिनट
अंक : 40

निर्देशन : 1. सभी प्रश्न करने है। सबके अंक समान है। 2. उत्तर देने से पहले प्रश्नों को अच्छी तरह पढिए। 3. समय बर्बाद न कीजिए। अगर आपको किसी प्रश्न का उत्तर न आता हो तो अगले प्रश्न के बारे में सोचिए। 4. इस प्रश्न में 40 प्रश्न दिए गए है जो अलग अलग प्रकार के है नीचे दिए गए 8 प्रश्नों के 4 उत्तर दिए गए है जिनमें से केवल एक ठीक है। आपको सही उत्तर से सम्बन्धित अक्षर A, B, C तथा D के दायी और दिए गए स्थान पर लिखना है।

प्र.1 वर्तमान में भारतीय संविधान में मौलिक अधिकारों की संख्या है:-

a) 6 b) 7
c) 8 d) 9 ( )

प्र.2 चौथा मौलिक अधिकार है:-

a) समानता का b) स्वतंत्रता का
c) शोषण के विरूद्ध d) धार्मिक स्वतंत्रता का ( )

प्र.3 सम्पत्ति के अधिकार को कौन से संशोधन के अन्तर्गत हटा दिया गया है:-

a) 41 b) 42
c) 44 d) 46 ( )

प्र.4 संविधान के किस अनुच्छेद के अन्तर्गत कानून के सामने सभी नागरिक समान हैं:-

a) 14 b) 15
c) 17 d) 18 ( )

प्र.5 संविधान का अनुच्छेद 29(1) कौन से मौलिक अधिकार के अन्तर्गत है:-

a) शोषण के विरुद्ध अधिकार b) धार्मिक स्वतंत्रता

c) संवैधानिक उपचारों का अधिकार d) शिक्षा तथा संस्कृति का अधिकार ( )

प्र.6 संविधान के किस अनुच्छेद के अन्तर्गत बेगार लेने पर प्रतिबन्ध है:-

a) 21 b) 22

c) 23 d) 24 ( )

प्र.7 भारतीय संविधान में राज्य-नीति के निर्देशक सिद्धांतो की संख्या है।

a) 10 b) 12

c) 14 d) 15 ( )

प्र.8 भारत ने राज्य-नीति के निर्देशक तत्वों को कौन से देश से ग्रहण किया है-

a) इंग्लैंड b) आयरलैंड

c) स्काटलैंड d) न्यूजीलैंड ( )

नीचे दिए गए प्रश्नों 9-12 तक में सही तथा गलत का निशान लगाओ।

9. संविधान के अनुच्छेद 17 के अन्तर्गत अस्पृश्ययता का उन्मूलन कर दिया गया है। सही/गलत

प्र.10 संविधान के अनुच्छेद 24 के अनुसार 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को कारखानों या खानों में काम नहीं करने दिया जाएगा। सही/गलत

प्र.11 संविधान के अनुच्छेद 28 के अन्तर्गत शोषण के विरूद्ध अधिकार का उल्लेख किया गया है। सही/गलत

12. संविधान के अनुच्छेद 19(1) के अनुसार सभी नागरिक कानून के सामने समान हैं। सही/गलत

नीचे दिए गए 13-20 तक के प्रश्नों में रिक्त स्थान दिए गए हैं। इन प्रश्नों के उतर रिक्त सीनों में भरने हैं।

41

प्र.13 भारतीय संविधान में मौलिक कर्तव्यों की संख्या..............है।

प्र.14 भारतीय संविधान में मौलिक कर्तव्यों को............में शामिल किया गया।

प्र.15 समानता के अधिकार को अनुच्छेद 14 से........के अन्तर्गत रखा गया है।

प्र.16 स्वतंत्रता के अधिकार को अनुच्छेद........से 22 के अन्तर्गत रखा गया है।

प्र.17 भारतीय संविधान में मौलिक कर्त्तव्यों को.........संशोधन के अन्तर्गत शामिल किया गया।

प्र.18 सवैंधानिक उपचारों के अधिकार को अनुच्छेद.........के अन्तर्गत रखागया है।

प्र.19 शोषण के विरूद्ध अधिकार को अनुच्छेद 23 से.........के अन्तर्गत रखा गया है।

प्र.20 भारतीय संविधान में राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांतो को........... संशोधन के अन्तर्गत शामिल किया गया है।

नीचे दिए गए 21-25 प्रश्नों का उचि मिलान कीजिए:-

प्र.21 अस्पृश्यता उन्मूलन	क. अनुच्छेद 15
प्र.22 भारत क प्रभुसता तथा अखंडता को बनाए रखना	ख. मौलिक अधिकार
प्र.23 वन्य जीवन तथा पुरानी इमारतों की सुरक्षा	ग. अनुच्छेद 17
प्र.24 सामाजिक समानता की स्थापना	घ. मौलिक कर्तव्य
प्र.25 मानव के क्रय-विक्रय पर प्रतिबंध	ङ. राज्य-नीति का निर्देशक सिद्धांत

CO-CURRICULAR ACTIVITIES.

Activities in month of Dece

Activities in the month of Jan...

Activities in month of Febru

3.

School Record

About the School.

Name of School
Area / Place
Distance
Name of Principle
No of rooms.
No of classes / sections
Total No of Students
Library faciulty.
Transport facility.
Canteen.
Cleanness
Total No of Staff members.
Result of the School.
No of Play ground.

School Time Table.

5

Cumulative Record Card

जो आपकी File मे लगा हुआ है।
केवल उसे भरना है।

Attendance Register of the No

Attendance Register of the Decem

यह आपकी फाइल में है

केवल इसे भरना है

Attendance Register of the Jan

Attendance Register – Feb – 2017

7.

स्थानान्तरण - पत्र,

आपकी File में है इसे केवल भरना है।